यूनियन सृजन

अब नारी की बारी!

वर्ष - 8, अंक - 4, मुंबई, अक्तूबर-दिसंबर, 2023

महिला उद्यमिता विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India

A Government of India Undertaking

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 14.02.2024

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष - 8, अंक - 4, मुंबई, अक्तूबर-दिसंबर, 2023

संरक्षक

ए. मणिमेखलै
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

अरुण कुमार
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादकीय सलाहकार

जी.एन.दास
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

रामजीत सिंह
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादन सहयोग

नितिन वासनिक
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India
A Government of India Undertaking

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 1
- संपादकीय 2
- महिला विशेष हिंदी कार्यशाला - यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की विशेष पहल 3-4
- महिला उद्यमिता की अवधारणा 5-6
- भारत में महिला उद्यमिता का विकास 7-8
- महिला उद्यमिता आर्थिक विकास का सोपान 9
- हिंदी दिवस मुख्य समारोह 10-11
- ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता 12-14
- ई-कारोबार के क्षेत्र में महिला उद्यमिता 14-15
- लघु उद्योग में महिला उद्यमिता 16-17
- स्वंय सहायता समूह 18
- महिला उद्यमिता और स्वयं सहायता समूह 19
- महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता 20
- क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग विषयों पर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन 21
- महिला उद्यमिता - सफलता की राह में चुनौतियां और उनके समाधान 22-23
- महिला उद्यमिता विकास में बैंकों का योगदान 24-25
- सेंटरस्प्रेड : होयसाला की विरासत बेलुर-हलेबीडु 26-27
- काव्य सृजन 28-29
- कौशल विकास में ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका 30
- सफलता की कहानियाँ 31
- भारत की प्रेरणाप्रद महिलाएं 32-34
- दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला 35
- साहित्य सृजन - राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार 'पद्मश्री' विजयदान देथा 36-37
- पुस्तक समीक्षा : गेटिंग थिंग्स डन - फ्रांसिस लोबो 38-39
- कहानी : सच्चा सौदा 40
- यात्रा सृजन : जगन्नाथ मंदिर 41
- नराकास से प्राप्त पुरस्कार 42-43
- राजभाषा समाचार 44-47
- आपकी नज़र में 48

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank | union.srijan@unionbankofindia.bank
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

सर्वप्रथम, मैं 'यूनियन सृजन' के पाठकों को नव वर्ष 2024 के अवसर पर हार्दिक शुभकानाएं देती हूँ. 'महिला उद्यमिता' विशेषांक के माध्यम से आप सभी के साथ अपना दृष्टिकोण साझा करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है. 'महिला उद्यमिता' समाज में महिलाओं की उन्नति और सशक्तिकरण का एक प्रमुख माध्यम है. यह सरकार और सामाजिक संस्थाओं, दोनों के लिए समान महत्व का क्षेत्र है, चूंकि आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास के लक्ष्य भी इससे जुड़े हुए हैं.

भारतीय संविधान के प्रावधानों में ही लैंगिक समानता की नींव डाली गई है. अत: भारत में महिलाओं के लिए समान अवसरों की संकल्पना काफी पहले से विद्यमान है. अनेक प्रेरणाप्रद महिलाओं ने इन समान अवसरों का लाभ उठाते हुए न केवल स्वयं को शिक्षित और सशक्त किया, बल्कि समाज में व्याप्त रूढ़िवाद और कुप्रथाओं का भी डटकर मुकाबला करते हुए अन्य महिलाओं के साथ-साथ समाज के उद्धार के लिए भी कार्य किया.

महिलाएं काफी समय से आर्थिक व्यवस्था के प्रत्येक पहलू में अपना अस्तित्व स्थापित कर रही हैं. विभिन्न भूमिकाओं में महिलाओं ने अपनी प्रवीणता और समर्पण से खुद को और अपनी संस्था को गरिमामय पहचान दिलायी है. महिलाओं ने अपनी परंपरागत भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए नई जिम्मेदारियों को बखूबी निभाई और समाज को अपनी बहुआयामी कौशल का परिचय दिया.

डिजिटल पहल के नए दौर में व्यापार और नियोजन के परंपरागत ढांचे में काफी परिवर्तन आया है. इसका अत्यधिक लाभ उठाते हुए उद्यमशील महिलाओं ने अपने हुनर और कौशल के माध्यम से स्वयं के लिए और अपने साथियों के लिए आजीविका के नए-नए मॉडल स्थापित किए.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया महिला सशक्तिकरण को पूर्ण गंभीरता से लेता रहा है तथा संस्था के अंदर और बाहरी मंचों से उल्लेखनीय कार्य कर रहा है. बैंक में कार्यरत महिला कार्मिकों को मार्गदर्शन प्रदान करने और उन्हें नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से एक वर्ष पूर्व महिला सशक्तिकरण हेतु 'एम्पॉवर हर' समिति का गठन किया गया. इस पहल के अंतर्गत हर संभव स्तर पर महिला सशक्तिकरण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है.

बैंक में महिला ग्राहकों के लिए कई विशेष उत्पाद उपलब्ध हैं यथा यूनियन समृद्धि बचत खाता, यूनियन उन्नति चालू खाता, महिला व्यावसायिकों के लिए वैयक्तिक ऋण, सत्यापित स्वयं सहायता समूह महिलाओं के लिए ओवरड्राफ्ट सुविधा आदि. इसी श्रृंखला में महिला उद्यमियों के लिए 'यूनियन नारी शक्ति' योजना के तहत महिलाओं को अपना कारोबार प्रारंभ करने के लिए रियायती ब्याज दर पर आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है और प्रोत्साहित किया जाता है. देश भर में व्याप्त यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से स्वरोज़गार प्रशिक्षण प्राप्त महिलाएं स्वयं को सशक्त बना रही हैं और अपने परिवार तथा समाज के उद्धार में योगदान दे रही हैं. हाल ही में महिला ग्राहकों के लिए विशेष लाभ युक्त 'दीवा' क्रेडिट कार्ड का शुभारंभ किया गया है.

हालांकि 'महिला उद्यमिता' विकास हेतु कई पहल की गई हैं, तथापि अब भी कई ऐसी बाधाएं हैं जिन्हें पार कर इस राह को सुगम बनाने हेतु कार्य करने की आवश्यकता है. इसके लिए नित नई पहल की जा रही हैं, जिसमें सरकार, समाज और प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान है. मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'महिला उद्यमिता' विशेषांक में प्रस्तुत लेखों में उपर्युक्त सभी पहलुओं की सविस्तार चर्चा की गई है. मैं 'यूनियन सृजन' के लेखकों की प्रशंसा करती हूँ और संपादकीय टीम का अभिनंदन करती हूँ. मुझे आशा है कि उत्कृष्ट लेखन का यह सिलसिला इसी प्रकार जारी रहेगा.

शुभकामनाओं सहित,

आपकी,

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

दुनिया में दो ताकतें हैं - एक तलवार की और दूसरी कलम की.

एक तीसरी ताकत भी है जो इन दोनों से ज्यादा बलवान है - वह है महिला की ताकत.

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफ़ज़ई के इन शब्दों को आदर्श वाक्य के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए. महिलाएं समाज का आधा हिस्सा हैं और देश के कार्यबल का 37%. महिलाओं ने देश-काल परिस्थिति के अनुरूप अपने-आप को तराशा और हर परीक्षा में खरी उतरीं. महिला समाज का केंद्र है, समाज की समृद्धि, संवर्धन और संपोषण का मूल है. वह भावी समाज की सृजनकर्ता भी है और संपोषक भी. एक महिला के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है. ऐसे ऊर्जावान और प्रज्ञाशाली वर्ग के प्रति समर्पित 'यूनियन सृजन' का 'महिला उद्यमिता' विशेषांक अपने सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें गर्व का अनुभव हो रहा है.

समस्याओं का डटकर सामना करने और चुनौतियों को अवसर के रूप में परिवर्तित करने की कुशलता महिलाओं में सहज सिद्ध है. यदि वे संकल्प करें तो उनके सामने कोई विपत्ति या विषमता टिक नहीं पाएगी. महिलाओं में चेतना की लहर उमड़ रही है. नवाचार और नवोन्मेषिता के सहारे आज की महिला महत्वाकांक्षाओं के गगन में स्वच्छंद उड़ान भरने के लिए सक्षम बनी है. पूर्वधारणा की संकीर्ण मानसिकता त्याग कर समाज महिलाओं को एक अजेय बल के रूप में स्वीकार कर रहा है और उन्हें समान अधिकार देने की दिशा में सकारात्मक कदम उठा रहा है.

यह सच है कि महिलाओं के नियोजन या उद्यमिता के मार्ग का आरंभिक दौर सरल और सुगम नहीं रहा. व्यावसायिक या नियोजक परिवेश में महिलाओं को मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं थीं. अब स्थिति में काफी सुधार आया है. प्राय: महिलाओं से यह अपेक्षा रही है कि वे अपने पारंपरिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दें तथा इस प्राथमिक जिम्मेदारी को पूरा करने के बाद ही अपनी व्यावसायिक आकांक्षाओं की दिशा में कदम बढ़ाएं. यह अपेक्षा आज भी काफी हद तक बनी हुई है.

महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने का रास्ता अपने हिस्से की समस्याओं से मुक्त नहीं है. तथापि, हर्ष का विषय यह है कि आज का पारिवारिक परिवेश महिलाओं की सफलता का मार्ग प्रशस्थ कर रहा है. महिलाओं की इच्छा को प्राथमिकता मिलती है और उन्हें बराबर का ओहदा दिया जा रहा है. समाज ने भी अपनी भूमिका निभाई और महिला उद्यमिता के विकास हेतु योजनाएं तैयार की गईं. महिलाओं को शिक्षा, नियोजन और उद्यमिता के समान अवसर प्राप्त हैं. इसी भरोसे और प्रोत्साहन के बल पर महिलाओं ने अपनी क्षमताओं को पहचाना और अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाना सीखा. वे अपनी उपलब्धियों के आधार पर उच्च आदर्श स्थापित कर रही हैं. इसके परिणास्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं ने अपना वैश्विक वर्चस्व बनाया. अपनी निजी एवं पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यशैली विकसित कर वे कारोबार की नई परिभाषा रच रही हैं. महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं प्रारंभ की गईं, कई व्यवसायों में महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया. वे उद्यमी के साथ-साथ मेंटर भी बनीं और महिला उद्यमियों की नई पीढ़ी को भी तैयार कर रहीं हैं.

हमने इस व्यापक विषय से जुड़े विभिन्न पहलुओं को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है. हमारे लेखकों ने गुणवत्तापूर्ण लेखों के माध्यम से हमारे इस विचार को वास्तविकता के धरातल पर मूर्त रूप देने में उल्लेखनीय योगदान दिया है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं. संपादकीय सलाहकार सदस्यों के अमूल्य सुझावों के लिए हम सदा आभारी रहेंगे. हमें आशा है कि 'यूनियन सृजन' का यह 'महिला उद्यमिता' विशेषांक आपको पसंद आएगा. इस अंक के संबंध में आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी.

आपकी,

(गायत्री रवि किरण)

महिला विशेष हिंदी कार्यशाला – यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की विशेष पहल

प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है. इस दिन को महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और आभार प्रकट करने के दिन के रूप में मनाया जाता है. 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' की शुरुआत 1908 में हुई थी, जब 8 मार्च को न्यूयॉर्क स्थित गारमेंट वर्कर्स यूनियन में काम करने वाली महिलाओं ने सड़क पर निकलकर अपने अधिकारों की मांग की थी. इस घटना को जागरूकता का प्रतीक मानते हुए 8 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा.

इसी प्रकार 13 फरवरी को श्रीमती सरोजिनी नायडु के जन्मदिन के उपलक्ष्य में भारत में 'राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है. भारतीय समाज में महिलाओं के अधिकार स्थापित करने की दिशा में श्रीमती सरोजिनी नायडु द्वारा किए गए अप्रतिम प्रयास और उपलब्धियों के उपलक्ष्य में मनाया जाता है.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस तथा राष्ट्रीय महिला दिवस का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देना और महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा करना है. ये दिवस महिलाओं के सशक्तिकरण, समाज में उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक योगदान के महत्व को बढ़ावा देने के प्रतीक के रूप में मनाए जाते हैं.

कहा जाता है कि समाज में यदि किसी परिवर्तन की गति तीव्र करनी हो तो उसमें महिलाओं को शामिल करना चाहिए. क्योंकि यदि आप किसी परिवर्तन में पुरुष को भागीदार बनाते हैं तो आप सिर्फ़ एक व्यक्ति की भागीदारी पाते हैं, लेकिन महिला को भागीदार बनाने से आप पूरे परिवार को भागीदार बनाते हैं. यही कारण है कि महिलाओं को दुनिया की मुख्य धारा से

जोड़ने के लिए हर एक संस्था और समाज अलग-अलग तरीक़े से महिला दिवस को मनाते आए हैं. भारत में भी सरकारी और ग़ैर सरकारी संस्थाएं महिला दिवस को बेहद ख़ास बनाने के लिए उत्सवों का आयोजन करती हैं. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया भी इस उपलक्ष्य पर भव्य कार्यक्रमों का आयोजन करता है.

महिला कार्मिकों के लिए विशेष कार्यक्रम के आयोजन के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन में उनके योगदान को विशेष पहचान देने तथा महिला कार्मिकों की बहुआयामी दक्षता को राजभाषा के साथ जोड़ने के उद्देश्य से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा 2018 से महिला विशेष हिंदी कार्यशाला की संकल्पना का शुभारंभ किया गया. उच्च प्रबंधन की अनुमति से बैंक के राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग ने महिला दिवस को ख़ास बनाने के लिए अपनी वार्षिक कार्ययोजना में इसे शामिल किया. प्रति वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बैंक के केंद्रीय कार्यालय के साथ-साथ प्रत्येक अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा बैंक के महिला स्टाफ सदस्यों के लिए महिला विशेष कार्यशाला का आयोजन किया जाता है.

महिला विशेष हिंदी कार्यशाला का उद्देश्य
इस विशेष हिंदी कार्यशाला का उद्देश्य महिला कार्मिकों को राजभाषा नीति-नियम की जानकारी प्रदान करते हुए उनकी प्रतिभागिता के साथ बैंक की शाखाओं और कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करना है. साथ ही इस विशेष कार्यशाला में महिला कार्मिकों के दैनिक काम-काज एवं निजी जीवन से जुड़े विषयों के सत्र भी शामिल किए जाते हैं. कार्यशाला में अपने-अपने क्षेत्र में मान्यता प्राप्त विशिष्ट महिलाओं को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है, ताकि इनके जीवंत उदाहरण से बैंक की महिला कर्मचारी प्रेरणा प्राप्त करें.

महिला विशेष हिंदी कार्यशाला की रूप रेखा - प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस तथा राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में फरवरी / मार्च के महीने में इस विशेष

कार्यशाला का आयोजन किया जाना अपेक्षित है. इस कार्यशाला में संबंधित क्षेत्र / अंचल की महिला कार्मिकों को ही नामित किया जाता है. अन्य हिंदी कार्यशालाओं की भांति इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, दैनिक काम-काज में हिंदी का प्रयोग, रिपोर्टिंग आदि राजभाषा से संबंधित सत्रों के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण, कार्यालयीन कार्य-निजी जीवन संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य, करियर आयोजना, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की समस्या का निवारण जैसे सत्र शामिल किए जाते हैं.

इस कार्यशाला को और प्रभावी एवं सार्थक बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस थीम के अनुसरण में प्रत्येक वर्ष विशेष हिंदी कार्यशाला हेतु थीम का चयन किया जाता है और इस थीम से जुड़े विषय की महिला विशेषज्ञ को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित कर, उनका सम्मान किया जाता है. इस प्रकार आमंत्रित मुख्य अतिथि अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र से संबंधित सूचना और अपने अनुभवों को महिला स्टाफ के साथ साझा कर उन्हें प्रेरणा प्रदान करती हैं.

इस कार्यशाला के दूरगामी प्रभाव -

♦ इन कार्यशालाओं में अतिथि के रूप में आने वाली लीडर्स का राजभाषा के साथ बैंक से जुड़ाव हुआ और जब बड़े लीडर्स ने राजभाषा में अपना दैनिक काम-काज करने का आह्वान किया तो इसके सकारात्मक परिणाम भी आए और बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति उत्साहजनक रूप से बेहतर हुई.

♦ अतिथि वक्ताओं ने हमारे बैंक की इस कार्यशाला की अपने लोगों के बीच सराहना की, जिससे बैंक का प्रचार हुआ.

♦ इन कार्यशालाओं के माध्यम से बैंक की महिला कार्मिकों को कारोबार, प्रशासन तथा सामाजिक क्षेत्र में देश की बड़ी महिला लीडर्स के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं से बाचतीत का अवसर मिला, जो उन्हें अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं. इससे बैंक की महिला कार्मिकों में आगे बढ़कर एक लीडर की भूमिका निभाने हेतु आत्मविश्वास जागृत होता है.

♦ कार्यशालाओं में शामिल होने वाली महिला कार्मिकों में बड़े लीडर्स के साथ बातचीत होने के कारण सकारात्मक परिवर्तन हुए और वे हिंदी में अपना काम-काज करने के साथ-साथ अपने करियर को लेकर भी सकारात्मक हुईं. इस कार्यशाला के माध्यम से वर्क लाइफ बैलेंस जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई और कई मुख्य अतिथि के रूप में आई महिला लीडर्स ने अपने अनुभवों से महिलाओं की इस दुविधा को दूर करने के उपाए भी बताए.

♦ महिलाओं के लिए विशेष तौर पर आयोजित इन कार्यशालाओं ने महिलाओं के लिए काउंसिलिंग सत्रों की तरह भी काम किया. महिलाओं को काम और घर का प्रबंधन करने जैसी बहुत सी समस्याओं के संबंध में उचित मार्गदर्शन मिलने लगा. जिस प्रकार एक महिला अपने घर और कार्य स्थल का उचित प्रबंधन कर सकती हैं, इसका मुक़ाबला कोई और नहीं कर सकता. इस संदर्भ में कई प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सम्माननीय महिला अतिथियों से मिले.

♦ राजभाषा के कार्यक्रमों में बड़े विद्वान, अधिकारी, लीडर्स इत्यादि आने से राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ गया. महिला कार्मिकों की रुचि राजभाषा में बढ़ी और राजभाषा में काम-काज का स्तर भी बढ़ा. महिला कार्मिक उत्साह के साथ राजभाषा को स्वीकार कर अपने कार्यों में हिंदी का उपयोग करने लगीं.

♦ यह कार्यशाला भारत के सभी राज्यों में स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित की जाती है एवं इसके माध्यम से देश की सम्माननीय महिला हस्तियां जुड़ती हैं. यह देश भर में बैंक के अच्छे छवि निर्माण एवं बैंक में लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता को भी दर्शाता है.

♦ इसके माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों, समस्याओं और योजनाओं के बारे में जागरूक किया जाता है. यह उन्हें अपने कार्य स्थल एवं समाज में पहचान प्राप्त करने में मदद करता है.

♦ कार्यशाला में भाग लेने से महिला कार्मिक के नेतृत्व कौशल में विकास होता है, जो उन्हें अपने करियर और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने में मदद करता है.

♦ इस कार्यशाला के माध्यम से महिला स्टाफ को उनके स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक किया गया. अकसर महिलाएं अपने काम-काज और घर को संभालने में अपनी सेहत के साथ समझौता कर लेती हैं. अत: स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े कई अतिथि वक्ताओं ने महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया एवं स्वस्थ रहने के कई उपाए बताए गए, जिससे अनेक महिला कार्मिकों को लाभ मिला.

यह कार्यशाला महिला कार्मिकों के भीतर समर्पण की छवि निर्माण का कार्य करती है तथा मैत्रीपूर्ण तरीके से बैंकिंग कारोबार के लिए सशक्त बनाती है. ऐसा माना जाता है कि कोई भी संस्था यश के शिखर पर तब तक नहीं पहुँच सकती जब तक उसकी महिला कार्मिक अपने पुरुष सहकर्मियों के कंधे से कंधा मिलाकर न चलें. इस तरह संस्था के विकास के साथ समाज भी समृद्ध होता है.

बैंक के उच्च प्रबंधन की स्वीकृति एवं मार्गदर्शन के तहत राजभाषा विभाग द्वारा की गई इस पहल को विभिन्न मंचों पर सराहा गया एवं हमारे बैंक की भूरि-भूरि प्रशंसा भी हुई है. किसी भी कार्य की सार्थकता उसकी स्वीकार्यता पर निर्भर है. अत: हम कह सकते हैं कि इस विशेष पहल को बैंक द्वारा स्वीकार्यता मिली और हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सार्थक हुए. किन्तु हमारा दायित्व यहीं खत्म नहीं होता. हम इस पहल को और भी उत्साह और सक्रियता के साथ आगे तक लेकर जाएंगे और अपने राजभाषा विभाग के माध्यम से भविष्य में भी इस प्रकार के नवोन्मेषी कार्य करते रहेंगे, जिससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ महिला कार्मिकों को भी लाभान्वित किया जा सके.

रामजीत सिंह
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

महिला उद्यमिता की अवधारणा

भारत एक विशाल देश है जिसमें लगभग 135 करोड़ जनसंख्या निवास करती है. इसमें से लगभग 50 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की है. प्राय: हम यह भी देखते हैं कि बीसवीं सदी तक स्वाभाविक रूप से महिलाओं के कार्यों को घर के अंदर तक ही सीमित किया जाता रहा है. परंतु इक्कीसवीं शताब्दी में महिलाओं के लिए विभिन्न योजनाओं, शिक्षण की उचित व्यवस्था तथा कामकाजी क्षेत्र में इनके योगदान को बढ़ावा मिला और महिलाओं ने तीव्र गति प्राप्त की. अब महिलाओं ने अपने परिश्रम, लगन तथा प्रयासों से उद्यमी रूप में जो पहचान बनाना शुरू की है वह पूरे विश्व में परिलक्षित होने लगी है.

महिला उद्यमी वे महिलाएं हैं जो किसी कारोबारिक उद्यम के बारे में सोचती हैं, उसे शुरू करती हैं, उत्पादन के कारकों को संगठित और संयोजित करती हैं, साथ ही उद्यम संचालित करती हैं, जोखिम उठाती हैं और इसे चलाने में शामिल आर्थिक अनिश्चितता को संभालती हैं.

उद्यमियों के रूप में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति के कारण देश में कारोबार और आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है. देश में रोजगार के अवसर पैदा करके, जनसांख्यिकीय परिवर्तन लाकर और महिला संस्थापकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करके महिलाओं के स्वामित्व वाले कारोबार, उद्यम, समाज में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं. देश में संतुलित विकास के लिए महिला उद्यमियों के सतत विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से, स्टार्टअप इंडिया सहित अन्य विभिन्न पहलों, योजनाओं, नेटवर्क और समुदायों को सक्षम बनाने और स्टार्टअप इकोसिस्टम में विविध हितधारकों के बीच भागीदारी को सक्रिय करने के माध्यम से महिला उद्यमिता को मजबूत बनाने का हर प्रयास भी जारी है तथा महिलाएं स्वयं भी आगे बढ़कर नेतृत्व करने हेतु तत्पर दिख रही हैं.

महिला उद्यमिता की परिभाषाएं:-

प्रसिद्ध लेखक श्री शुम्पीटर के अनुसार

"महिला उद्यमी वे महिलाएँ हैं जो किसी कारोबारिक गतिविधि का आविष्कार करती हैं, आरंभ करती हैं या अपनाती हैं. जो महिलाएँ सक्रिय रूप से कारोबार में नवीनता लाती हैं, पहल करती हैं या अपनाती हैं, उन्हें महिला उद्यमी कहा जाता है."

भारत में कंपनी नियमों के अनुसार

"एक महिला उद्यम को, एक महिला द्वारा स्वामित्व और नियंत्रण वाले उस उद्यम के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसकी पूंजी में उस महिला की न्यूनतम 51 प्रतिशत वित्तीय हित है और जो उद्यम में उत्पन्न रोजगार का कम से कम 51 प्रतिशत महिलाओं को देती हैं."

फ्रेडरिक हार्बिसन के अनुसार "कोई भी महिला या महिलाओं का समूह जो किसी आर्थिक गतिविधि का नवाचार करता है, आरंभ करता है या अपनाता है, उसे महिला उद्यमिता कहा जा सकता है."

दुनिया भर में एक तिहाई से अधिक उद्यम, महिला उद्यमियों द्वारा चलाए जाते हैं. आर्थिक प्रगति, शिक्षा तक बेहतर पहुंच, शहरीकरण, उदारता, लोकतांत्रिक संस्कृति का प्रसार और समाज द्वारा मान्यता के कारण भारत में महिला उद्यमिता में बहुत तेजी आई है. महिला उद्यमियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत में विशेष प्रोत्साहन दिया जाता है और अभियान चलाए जा रहे हैं. स्टार्ट-अप इंडिया और स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजनाएं भी महिलाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभाती हैं.

दुनिया भर में धीरे - धीरे महिला उद्यमी सफल उद्यमी के रूप में उभर रही हैं और अपने लिए कई उपलब्धियां भी अर्जित कर रही हैं.

वर्तमान समय में विशेषकर भारत में बदलते परिवेश एवं सामाजिक परिवर्तन के कारण महिला उद्यमियों की संख्या बढ़ी है तथा इसे और बढ़ाने की आवश्यकता है. महिलाओं द्वारा उद्यम स्थापित करने के कई कारक हो सकते हैं. इन कारकों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है.

i. **आर्थिक आवश्यकता:** कारोबार में महिलाओं का प्रवेश कोई नई घटना नहीं है. संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने और मुद्रास्फीति या बढ़ती कीमतों के सामने जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त आय की आवश्यकता के कारण महिलाओं ने कारोबार की प्रतिस्पर्धी दुनिया में प्रवेश करना शुरू किया. इस प्रकार आर्थिक आवश्यकता के कारण महिलाएँ आय अर्जित करने और अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने के लिए कारोबार के क्षेत्र में प्रवेश करने लगी हैं.

ii. **उच्च उपलब्धि की इच्छा:** एक अन्य प्रेरक शक्ति उनके जीवन में उच्च उपलब्धि की इच्छा है. महिलाओं को स्वयं को सिद्ध करने और खुद को परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में साबित करने की इच्छा प्रबल होती है. यह एक महिला के उद्यमी बनने के लिए सबसे मजबूत प्रेरक शक्ति होती है.

iii. **स्वतंत्रता:** आज की महिला अपने आपको स्वतंत्र रखना चाहती है. वह आर्थिक रूप से किसी पर आश्रित रहना नहीं चाहती है. यह उनके लिए एक मजबूत प्रेरणा शक्ति, आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान के साथ स्वतंत्र जीवन जीने का एक संकल्प है. एक सफल कारोबार का स्वामित्व और नियंत्रण,

एक महिला उद्यमी को समाज में प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता की भावना प्रदान करती है.

iv. **सरकारी प्रोत्साहन:** सरकारी और गैर-सरकारी निकायों ने स्व-रोज़गार और व्यावसायिक उद्यमों के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर अधिक ध्यान और प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया है. सरकार द्वारा देश में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम तैयार किए गए हैं और विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं शुरू की हैं. इस तरह की प्रोत्साहन योजनाओं ने महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया है.

v. **शिक्षा:** महिलाएं विभिन्न प्रकार की तकनीकी, व्यावसायिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक और विशिष्ट शिक्षा ले रही हैं ताकि वे खुद को किसी प्रकार के कारोबार में स्वरोजगार के योग्य बना सकें. महिलाएं अपनी कार्यकुशलता, कड़ी मेहनत तथा बुद्धिमत्ता से कई क्षेत्रों में पुरुषों से आगे निकल गई हैं.

vi. **मॉडल भूमिका:** पुरुषों की तरह महिलाएं भी अपने देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान देने हेतु इच्छुक हैं. वे पहले से ही राजनीति, शिक्षा, सामाजिक क्षेत्र, प्रशासन आदि क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी हैं. अब उन्होंने कारोबारिक क्षेत्र में प्रवेश करते हुए आर्थिक क्षेत्रों में निर्णय लेना शुरू कर दिया है जहां वे अन्य क्षेत्रों की तरह अपना महत्व भी दिखा सकती हैं.

vii. **पारिवारिक कारोबार:** महिलाएं परिवार की आर्थिक गतिविधि या कारोबार करने और पारिवारिक कारोबार में अपने परिवार का समर्थन करती हैं ताकि पारिवारिक कारोबार के खर्चों को कम किया जा सके और इसकी आय में वृद्धि की जा सके.

viii. **रोज़गार सृजन:** रोज़गार सृजन एक प्रभावशाली कारक है जो महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करता है. महिला उद्यमी आम तौर पर श्रम-गहन लघु और ग्रामीण उद्योग या हस्तशिल्प अपनाती हैं और उनमें रोजगार सृजन की उच्च क्षमता होती है.

ix. **स्वयं की पहचान :** महिलाएं सामाजिक प्रतिष्ठा तथा अपनी अलग पहचान बनाने की इच्छा रखती हैं. कारोबार में प्रवेश करने वाली महिलाएं आत्म-पहचान और सामाजिक मान्यता की स्थिति प्राप्त करती हैं.

x. **बढ़ती जागरूकता:** शिक्षा के प्रसार और महिलाओं के बीच बढ़ती जागरूकता के साथ महिला उद्यमियों की संख्या केवल पारंपरिक कुटीर उद्योग तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और कई अन्य बड़े उद्योगों में भी प्रवेश कर रही हैं जिनके लिए उच्च तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है.

इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाएं केवल घर की चहारदीवारी तक सीमित नहीं हैं बल्कि उपलब्धि-उन्मुख, करियर-केंद्रित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन रही हैं तथा देश के आर्थिक विकास एवं अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही हैं.

महिला उद्यमिता की इस अवधारणा ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है. भारत में भी महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में लगातार प्रयासरत हैं, जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक जगत में भी काफी परिवर्तन हो रहे हैं. महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपलब्धि से एक मिसाल कायम कर रही हैं.

रविनेश कुमार
क्षे. का., पटना

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

दिनांक 28.12.2023 को जोधपुर में क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्र, माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा की उपस्थिति में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्राप्त पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर को 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री संजीव रंजन सहाय तथा श्री विकास तिवाड़ी, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

अंचल कार्यालय, दिल्ली को 'द्वितीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए उप अंचल प्रमुख, श्री के एम रेड्डी तथा श्री रूपेश कुमार वर्मा, मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

क्षेत्रीय कार्यालय, मऊ को 'तृतीय' पुरस्कार तथा नराकास, मऊ को 'द्वितीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री मिथिलेश कुमार तथा श्री किशोर कुमार, प्रबंधक (रा.भा.).

भारत में महिला उद्यमिता का विकास

नारी समाज का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है. समाज में उसकी भूमिका बहुआयामी हो गयी है. वह परिवार, समाज, धर्म, राजनीति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से लेकर कारोबार और औद्योगिक क्षेत्र में अपनी पूरी भागीदारी निभा रही है.

उद्यमिता ने पूरे क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल की है और महिला-उद्यमिता एक महत्वपूर्ण मॉड्यूल बन गई है. भारत सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और उद्यमिता के महत्व को हर स्तर पर महसूस किया जाता है. रोजगार, महिलाओं को दर्जा और आर्थिक स्वतंत्रता देता है. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सही कहा था - "जब महिला आगे बढ़ती है, परिवार आगे बढ़ता है, गांव आगे बढ़ता है और देश आगे बढ़ता है."

मार्क जुकरबर्ग के अनुसार

"सबसे बड़ा जोखिम कोई जोखिम न लेना है. एक ऐसी दुनिया में जो तेजी से बदल रही है, जोखिम न लेना ही एकमात्र रणनीति है जिसके विफल होने की गारंटी है"

महिला उद्यमिता - क्षेत्र

स्वतंत्रता के बाद पहले के कुछ वर्षों तक महिला उद्यमिता भोजन, फल, सब्जियां, अचार, पापड़, सिलाई आदि जैसे पारंपरिक क्षेत्रों तक ही सीमित थी. अब महिला उद्यमियों ने इंजीनियरिंग, ब्यूटी पार्लर, आभूषण जैसे कई नए क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई हैं. हस्तशिल्प, विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन और अन्य विनिर्माण में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है. इससे पता चलता है कि महिला की उद्यमिता का आधार पारंपरिक रूप से आगे बढ़कर आधुनिक 3ई - इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स तक फैल गया है.

आज महिला हर प्रकार के उद्योगों को चला रही है, चला ही नहीं रही है बल्कि हर प्रकार के उद्योग में सफलता भी प्राप्त कर रही है, जिन्हें निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है:

1. खान पान उद्योग
2. फैशन और सौंदर्य
3. ई - कॉमर्स / ई- कारोबार
4. स्वास्थ्य और कल्याण
5. शिक्षा और ट्रेनिंग
6. कृषि और संबद्ध उद्योग
7. गृह आधारित उद्योग
8. बाहरी घरेलू उद्योग

आज की महिलाएं बाजार की जरूरतों से निपटने के लिए अधिक से अधिक पेशेवर और तकनीकी डिग्री ले रही हैं और इंटीरियर डेकोरेटर, निर्यातक, प्रकाशक, परिधान निर्माता के रूप में फल-फूल रही हैं और अब भी आर्थिक भागीदारी के नए रास्ते तलाश रही हैं. शायद इन्हीं कारणों से सरकारी निकायों, गैर सरकारी संगठनों, सामाजिक वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने भारत में महिलाओं के बीच उद्यमिता से संबंधित मुद्दों में रुचि दिखानी शुरू कर दी है.

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ शुरू की गई - यथा स्त्री शक्ति पैकेज, उद्योगिनी स्कीम, महिला उद्यम निधि स्कीम, स्टैंड अप इंडिया स्कीम, स्वयं सहायता समूह, महिला ई-हाट, महिला बैंक, महिला कॉयर योजना. महिला उद्यमिता प्लेटफार्म, अन्नपूर्णा स्कीम, महिला उद्योग निधि, प्रधान मंत्री मुद्रा योजना, प्रधान मंत्री रोजगार योजना, महिला सम्मान बचत योजना आदि.

महिला तथा बाल विकास विभाग की स्थापना वर्ष 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अंग के रूप में की गई थी. इस मंत्रालय का उद्देश्य महिला एवं बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है.

इसके अलावा निम्नलिखित कुछ योजनाएं हैं जो महिला उद्यमिता को बढ़ावा देती हैं.

- नेशनल अलायंस ऑफ यंग एंटरप्रेन्योर्स (एनएवाईई) जैसी कुछ संस्थाएं स्टार्ट-अप में महिलाओं का आकलन करती हैं, अच्छे निवेश अवसरों की पहचान करती हैं और अधिक आसानी से पूंजी जुटाती हैं.
- 'राष्ट्रीय महिला कोष' महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम प्रदान करता है.
- तमिलनाडु - ऑपरेशन फॉर डेवलपमेंट ऑफ वूमेन लिमिटेड
- एफ.आई.सी.सी.आई. (फ्लो) महिला संगठन
- एसोसिएशन ऑफ वूमेन एंटरप्रेन्योर्स ऑफ कर्नाटक (अवेक)
- वूमेन एसोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र (वेमा)
- सेल्फ-एंप्लॉयड वूमेन इंस्टीट्यूशन (सेवा) अहमदाबाद का अपना बैंक है जो ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को ऋण प्रदान करता है.
- महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम
- भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान

♦ भारतीय महिला उद्यमी परिषद भी महिलाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है.

तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश सरकारों ने विशेष रूप से महिला उद्यमियों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा दिया है. एसोसिएशन ऑफ लेडी एंटरप्रेन्योर्स इन आंध्र प्रदेश (एलीप) एक ऐसा संगठन है जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उद्यमिता को बढ़ावा देता है. चेन्नई के बाहरी इलाके में आईटी राजमार्ग के किनारे सिरुसेरी क्षेत्र में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए एक जैव प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित किया गया था.

उद्यमिता और कारोबार प्रशासन जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के आने से समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. महिला उद्यमिता सामाजिक सुधार लाने का एक बड़ा साधन हो सकता है. महिलाएं पारिवारिक आय में सकारात्मक योगदान दे सकती हैं तथा महिलाओं की छवि बदल सकती है. एक बार जब समाज में छवि में बदलाव आ जाता है, तो महिलाओं के लिए युवा पीढ़ी पर अधिक प्रभाव डालना आसान हो जाता है.

महिला उद्यमियों को अनेक आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है. इन सब समस्याओं के बावजूद, महिलाओं के नेतृत्व में विकास बड़े पैमाने पर हो रहा है और इसे स्वीकृति और मान्यता मिल रही है. स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं काफी आगे बढ़ रही हैं. वे अपनी सफलता, अपने उद्यमों और अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में बोलने का विश्वास दिखा रही हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यम स्थापित करने के लिए महिलाओं को सब्सिडी मिलने से विशेष रूप से प्रगति हुई है. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और विकास के अवसर खुले हैं.

अगर भारत $5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था वाला देश बनना चाहता है तो निश्चित रूप से भारत की महिलाओं को बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास में भाग लेना पड़ेगा जिसके लिए ज़रूरी है कि हर बालिका, हर महिला को शिक्षा का अवसर प्राप्त हो. आज नारी सशक्तिकरण के लिए सबसे ज़्यादा आवश्यक है सोच में परिवर्तन, जहां हम नारी को बराबरी का अधिकार दें, उनकी इज्जत करे; उन्हें हर परिस्थिति के लिए तैयार करें, कोई भेदभाव न करें और उनका साथ दें. जब तक पुरूष खुद को ऊंचा समझ कर महिलाओं को सहमति देते रहेंगे, बदलाव संभव नहीं होगा. महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि करनी होगी, तब ही समाज बदलेगा.

अर्चना
क्षे. का., जयपुर

समीक्षा बैठकों का आयोजन

दिनांक 13.10.2023 को अंचल कार्यालय, गांधीनगर में उप अंचल प्रमुख, श्रीमती याचना पालीवाल की अध्यक्षता में अंचलाधीन क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 12.12.2023 को अंचल कार्यालय, भोपाल में अंचल प्रमुख, श्री बिरजा प्रसाद दास की अध्यक्षता में अंचलाधीन क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया तथा अंचल के अंतर्गत प्रकाशित गृह पत्रिकाओं का विमोचन किया गया.

महिला उद्यमिता आर्थिक विकास का सोपान

महिलाएं अपनी उच्च क्षमता और जिम्मेदारी की समझ से अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं. आजकल, महिला उद्यमी समाज के विभिन्न क्षेत्रों और देश के कुछ हिस्सों से आती हैं. चाहे आईटी कंपनी हो या कंस्ट्रक्शन कंपनी, महिलाएं पुरुष वर्चस्व के पारंपरिक गढ़ को बदल रही हैं.

महिला उद्यमी स्व-निर्देशित और अत्यधिक प्रेरित होती हैं. उनमें विशिष्ट विशेषताएं भी होती हैं जो उनकी रचनात्मकता को बढ़ाती हैं और उन्हें बेहतर कारोबारिक तरीके के लिए नए विचार बनाने में मदद करती हैं.

वर्तमान में, भारत में लगभग 13.5-15.7 मिलियन महिला-स्वामित्व वाले उद्यम हैं, जो लगभग 20% कारोबारों का प्रतिनिधित्व करते हैं. कई कारोबारों में महिला उद्यमी नेतृत्व कर रही हैं और उम्मीदों से बढ़कर काम कर रही हैं.

अपनी कड़ी मेहनत से महिलाओं ने साबित कर दिया है कि बुद्धिमत्ता, दक्षता और रचनात्मकता के मामले में उनके आगे काफी संभावनाएं हैं. आज के कॉर्पोरेट जगत में महिलाएं साबित कर रही हैं कि वे एक मजबूत प्रेरक शक्ति हैं. भारत और दुनिया भर में, जब मातृत्व और उद्यमिता के बीच संतुलन की बात आती है तो महिलाएं सक्षम हैं.

अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमिता का योगदान : कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी, उनके काम की गुणवत्ता और भारत की जीडीपी में उनका योगदान अत्यधिक दृश्यमान है और यह दर्शाता है कि वे अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में किस प्रकार मदद कर रही हैं. उद्यमियों के रूप में महिलाओं की भागीदारी का स्तर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है.

भारत में आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी अत्यधिक दिखाई देती है. यह ध्यान देने योग्य है कि भारत में 30.37% से अधिक महिलाएँ उद्यमी या एम.एस.एम.ई. मालिक हैं. इसके अलावा, यह देश की श्रम शक्ति का 23.3% भी है. यह भी देखने में आ रहा है कि कृषि और विनिर्माण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी का स्तर पुरुषों की तुलना में अधिक है. इसके अलावा, महिलाओं की साक्षरता का स्तर भी दिन-ब-दिन बढ़ रहा है.

भारत में 432 मिलियन से अधिक महिलाएँ कामकाजी उम्र की हैं और यह संख्या बढ़ती जा रही है. उनकी बढ़ती क्षमता और समर्पण देश की समग्र आर्थिक वृद्धि में भी मदद कर सकता है.

महिला उद्यमिता से संबंधित प्रमुख कारक जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं :-

उत्पादकता वृद्धि को बढ़ावा देना : जब उद्यमिता की बात आती है, तो लिंग विविधता किसी कंपनी की उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर सकती है. शोध के अनुसार, महिला उद्यमी कार्यबल में नए कौशल और रचनात्मकता ला सकती हैं. जब किसी कंपनी की उत्पादकता बढ़ती है, तो उसकी सफलता का स्तर ऊंचा होता है, जिससे देश की आर्थिक वृद्धि होती है.

निवेशकों का समर्थन : आजकल, दुनिया भर में निवेशक महिला उद्यमियों का समर्थन करने और उन्हें स्वीकार करने में अत्यधिक रुचि रखते हैं. इससे महिला नेतृत्व वाली कंपनी को अच्छा निवेश मिलने की संभावना बढ़ जाती है. अच्छे निवेश से कंपनियों को फलने-फूलने के अधिक मौके मिल सकते हैं. इसके अलावा, चूंकि महिला उद्यमी अधिक यथार्थवादी परियोजनाएं दिखाती हैं, इसलिए निवेशकों को कारोबार के संदर्भ में यथार्थवादी धारणाएं मिल सकती हैं. इससे महिलाओं को बेहतर तरीके से फंडिंग पेश करने में मदद मिलती है. यह, अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

लैंगिक आय अंतर को कम करना : महिला उद्यमिता महिला सशक्तिकरण का समर्थन करती है. महिला उद्यमिता पर अधिक ध्यान देने से, भारतीय अर्थव्यवस्था की उत्पाद श्रृंखला में महिलाओं की भागीदारी की संभावना अधिक हो सकती है. इसके अलावा, व्यापक दृष्टिकोण से, महिला उद्यमियों द्वारा अन्य महिलाओं को काम पर रखने की अधिक संभावना है, जिससे कामकाजी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी. अंततः, यह देश में लैंगिक आय अंतर को कम करने में मदद करता है.

उच्चतर रिटर्न की संभावना : रिपोर्ट के अनुसार, महिला उद्यमिता के लिए कम निवेश की आवश्यकता होती है और अधिक राजस्व उत्पन्न होता है. महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्ट-अप जो निर्यात-उन्मुख, बाजार-विस्तार और नवीन हैं, किसी देश के आर्थिक विकास में बहुत योगदान देते हैं. वे उच्च क्षमता वाली महिला उद्यमियों को भी प्रोत्साहित करते हैं. उनके पास नए उत्पाद या सेवाएँ पेश करने और अपने कारोबारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का लक्ष्य है. इससे अधिक रिटर्न प्राप्त करने में भी मदद मिलती है.

उच्च जोखिम धारण करने की क्षमता : कई सर्वेक्षणों से पता चलता है कि महिला उद्यमी पुरुष उद्यमियों की तुलना में अधिक जोखिम उठाती हैं. इसके अलावा, महिलाओं में अवसरों की कल्पना करने की बेहतर क्षमता होती है. कभी-कभी, जोखिम लेना सार्थक होता है और इससे कारोबार में वृद्धि हो सकती है.

अनुकूलनशीलता में वृद्धि : महिलाएं अपने वातावरण और दूसरों की ज़रूरतों के अनुरूप ढलने में बेहतर होती हैं. इसीलिए वे अपने कारोबारों को बदलते मार्केटिंग रुझानों के अनुरूप बेहतर ढंग से ढाल सकती हैं. महिला उद्यमिता वाली कंपनियां अनुकूलन क्षमता में अधिक लचीली और तेज होती हैं. जब कोई कारोबार बेहतर अनुकूलन करता है, तो इससे बेहतर राजस्व और मुनाफा होता है, जो आर्थिक विकास में भी योगदान देता है.

निष्कर्ष : दुनिया भर में महिला उद्यमिता विकास को लेकर जागरूकता बढ़ रही है. डिजिटलीकरण और कोविड महामारी के बाद, महिला उद्यमिता पर निश्चित रूप से ध्यान बढ़ा है और अर्थव्यवस्था के लिए इसके लाभों पर ध्यान दिया जा रहा है.

महिलाएं लगातार सभी बाधाओं से निपट रही हैं और सफलता की ओर आगे बढ़ रही हैं. वे हर क्षेत्र में अपने योगदान और उपलब्धियों के लिए सराहना पा रही हैं. महिलाएं आर्थिक विकास में भूमिका निभाने में रुचि रखती हैं और उन्हें दुनिया भर के निवेशकों और अन्य लोगों से उत्कृष्ट समर्थन मिला है. इसलिए हम कह सकते हैं कि महिला उद्यमिता भारतीय अर्थव्यवस्था में अत्यधिक योगदान देने वाला कारक है.

रूपेश कुमार उपाध्याय
क्षे. का., अहमदाबाद

अंचल कार्यालयों / क्षेत्रीय कार्यालयों / यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित हिंदी दिवस मुख्य समारोह - 2023

यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र

अं.का., कोलकाता एवं स्थानीय क्षे.का.

अं.का., पुणे तथा स्थानीय क्षे.का.

अं.का., बेंगलूरु तथा क्षे.का. बेंगलूरु (पूर्व)

अं.का., भोपाल एवं स्थानीय क्षे.का.

अं.का., एवं क्षे.का. मंगलूरु

अं.का., वाराणसी

अं.का., हैदराबाद एवं स्थानीय क्षे.का.

अं.का., विजयवाडा

अं.का., विशाखपट्टणम

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गाजीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, चंदौली

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, मऊ

क्षेत्रीय कार्यालय, अनंतपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कडपा

क्षेत्रीय कार्यालय, करीमनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, खम्मम

क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुप्पूर

क्षेत्रीय कार्यालय, निजामाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुचिरापल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

क्षेत्रीय कार्यालय, रायगड़ा

क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी

क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

क्षेत्रीय कार्यालय, रीवा

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता

कुछ दशक पहले, भारत में, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में, एक महिला उद्यमी की कल्पना करना बहुत ही कठिन था. सांस्कृतिक बाधाएं, सामाजिक मानदंड और संसाधनों तक सीमित पहुंच ने महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं तक ही सीमित रहने के लिए मजबूर किया. उनकी उद्यमिता की भावना प्रबल होने से पहले ही दम तोड़ देती थी. वैश्वीकरण और नई सहस्राब्दी के साथ पूरे देश में परिवर्तन की बयार शुरू हुई. महिलाएं अपने पारंपरिक दायरों से बाहर निकल रही हैं, उद्यमिता के उज्ज्वल क्षेत्रों में अपनी सही जगह का दावा पेश कर रही हैं और न केवल अपने जीवन को बल्कि ग्रामीण भारत के परिदृश्य को भी बदल रही हैं.

ग्रामीण महिला उद्यमियों की यह उड़ान केवल संख्यात्मक नहीं है; बल्कि यह उनके लचीलेपन, सरलता और अदम्य मानवीय भावना का प्रमाण भी देती हैं. स्वतंत्रता की आस, अपने परिवार की स्थिति में सुधार करने की इच्छा और समाज में योगदान देने की चाहत से प्रेरित होकर, महिलाएं कृषि और पशुपालन से लेकर हस्तशिल्प और ई-कॉमर्स तक विभिन्न क्षेत्रों में कदम रख रही हैं. उनके उद्यम, हालांकि अलग हैं, लेकिन इनके पीछे की सोच एक समान सूत्र साझा करती है - परंपरा द्वारा लगाई गई सीमाओं को तोड़ने की भावना और अपनी नियति खुद बनाने की इच्छा.

तथापि, उद्यमिता की सफलता का मार्ग, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के लिए, आसान नहीं होता है. उन्हें चुनौतियों की एक बड़ी श्रृंखला का सामना करना पड़ता है, कई सारी बाधाओं को पार करना होता है. पूंजी तक पहुंच एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है. पारंपरिक वित्तीय संस्थान अक्सर महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबारों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं. जटिल बाजार की गतिशीलता से निपटना, सीमित गतिशीलता से जूझना और परिवार और उद्यमिता की मांगों को संतुलित करना महिला उद्यमियों के लिए कठिनाइयों को और बढ़ा देता है.

लेकिन ये चुनौतियाँ अजेय नहीं हैं. विभिन्न हितधारकों के ठोस प्रयास से एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो रहा है. इसमें बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण है. मुद्रा ऋण, अन्नपूर्णा योजना और स्त्री-शक्ति योजना जैसी सरकारी पहल बहुत आवश्यक वित्तीय सहायता और उद्यमिता प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं. निजी संस्थाएँ और गैर सरकारी संगठन भी इस दिशा में सहयोग प्रदान कर रहे हैं. वे कौशल विकास कार्यक्रम, परामर्श और प्रौद्योगिकी तक पहुँच उपलब्ध करा रहे हैं.

डिजिटल साक्षरता के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना गेम-चेंजर साबित हो रहा है. उन्हें ऑनलाइन मार्केटप्लेस, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स पोर्टल से जोड़कर प्रौद्योगिकी भौगोलिक विभाजन को पाट रही है और व्यापक बाजारों के लिए दरवाजे खोल रही है. इससे अनंत संभावनाओं की दुनिया खुल जाती है - ग्रामीण महिलाएं अब बिचौलियों को दरकिनार करते हुए अपने अद्वितीय उत्पादों और सेवाओं को वैश्विक ग्राहकों के सामने प्रस्तुत कर सकती हैं और अधिक लाभ प्राप्त कर सकती हैं.

अब हमारे पास उन महिलाओं की प्रेरक कहानियाँ सामने आ रही हैं जो सभी बाधाओं को पार करते हुए आशा की किरण बनकर उभरीं. गोदावरी सतपुते का मामला लीजिए, जिन्होंने बेकार सामग्री को सजावटी कागज के लैंप में बदलने का उद्यम प्रारम्भ किया. इतना ही नहीं, इस प्रक्रिया में इन्होंने कई वंचित महिलाओं को भी सशक्त बनाया. अनीता देवी, जिन्होंने जैविक मशरूम की खेती के माध्यम से नालंदा गांवों के परिवर्तन का नेतृत्व किया. किसान से उद्यमी बनी अतराम पद्मा बाई, जिन्होंने अपने गांव को कृषि उपकरणों और स्वच्छ पेयजल से सशक्त बनाया. ये महिलाएं सिर्फ सफलता की कहानियां नहीं हैं; वे परिवर्तन की उत्प्रेरक हैं.

इन महिला उद्यमियों के प्रयास ग्रामीण भारत में अप्रयुक्त अपार संभावनाओं को उजागर करते हैं. यदि सही वातावरण के साथ समर्थन किया जाए, तो महिला उद्यमी एक ट्रिलियन-डॉलर की कृषि क्षमता को सक्रिय कर सकती हैं, रोजगार पैदा कर सकती हैं और समावेशी आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकती हैं. उनकी सफलता एक अधिक न्यायसंगत समाज का मार्ग प्रशस्त करेगी.

अभी तो यह शुरुआत है. ग्रामीण महिला उद्यमियों की शक्ति को पूरी तरह से उजागर करने के लिए कुछ उपाय किए जाने की आवश्यकता है.

वित्तीय उत्पाद और सेवाएँ तैयार करना: मौजूदा वित्तीय मॉडल अक्सर ग्रामीण और महिला-नेतृत्व वाले कारोबारों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल होते हैं. सूक्ष्म-वित्तपोषण समाधान, लचीली ऋण चुकौती संरचनाएं और संपार्श्विक-मुक्त ऋण विकल्प विकसित करने से पूंजी तक पहुंचने में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकता है.

कारोबारिक संघों को मजबूत करना: ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों के लिए समर्पित संघों की रचना से आपस में सीखने,

सहयोग करने और ज्ञान साझा करने को बढ़ावा मिल सकता है. ये संघ चुनौतियों से निपटने और संसाधनों तक पहुँचने के लिए कारगर हो सकते हैं.

सामाजिक सुरक्षा और बच्चों की देखभाल को प्राथमिकता देना: घरेलू ज़िम्मेदारियों का बोझ अक्सर महिला उद्यमिता में बाधा बन सकता है. किफायती बाल देखभाल और सामाजिक सुरक्षा योजनाएं प्रदान करने से उनका समय और ऊर्जा बच सकती है, जिससे वे अपने कारोबार पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं.

डिजिटल विभाजन को पाटना: ग्रामीण बुनियादी ढांचे में निरंतर निवेश, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के साथ मिलकर, सभी के लिए प्रौद्योगिकी तक समान पहुंच सुनिश्चित कर सकता है. महिलाओं को प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के कौशल से लैस करना उनके कारोबारों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है.

मेंटरशिप और शिक्षा: महिला उद्यमियों को अनुभवी सलाहकारों के साथ जोड़ना और निरंतर शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करना उन्हें एक सफल कारोबार चलाने की जटिलताओं से निपटने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस कर सकता है.

ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबारों को प्रोत्साहित और सशक्त बनाना केवल एक आर्थिक रणनीति नहीं है; यह एक सामाजिक अनिवार्यता है. यह आधी आबादी की सुप्त क्षमता को उजागर करने के लिए आवश्यक है.

चूँकि भारत एक नए युग की दहलीज पर खड़ा है, इसकी ग्रामीण महिलाओं की उद्यमिता की भावना का पोषण करना सिर्फ एक विकल्प नहीं है, बल्कि एक आवश्यकता है. इस तरह के निवेश का लाभांश महज आर्थिक लाभ से कहीं आगे जाएगा, समुदायों को मजबूत करने, परिवारों को सशक्त बनाने और राष्ट्र में लैंगिक समानता को स्थापित करने में सहायक होगा.

आर्थिक सशक्तिकरण से आगे:

ग्रामीण महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के आर्थिक लाभ निर्विवाद हैं. इसके और भी लाभ हैं:

ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देना: जैसे-जैसे महिला उद्यमी अपने कारोबार का निर्माण और विस्तार करती हैं, वे अपने और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करती हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों के आय में वृद्धि होती है और आजीविका में सुधार होता है.

कृषि परिदृश्य में विविधता : महिलाएं अक्सर पारंपरिक कृषि पद्धतियों में नए दृष्टिकोण और विविधता लाती हैं, जिससे अधिक टिकाऊ और समावेशी खेती के तरीकों को बढ़ावा मिलता है.

छिपे हुए बाज़ारों को सक्रिय करना: प्रौद्योगिकी और ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म का लाभ उठाकर, ग्रामीण महिला उद्यमी व्यापक बाज़ारों में प्रवेश कर सकती हैं. अपने अनूठे उत्पादों और सेवाओं को नए उपभोक्ताओं तक ला सकती हैं.

गरीबी और सामाजिक असमानता को कम करना: जब महिलाएं कमाती हैं और अपने वित्त पर नियंत्रण रखती हैं, तो उनके पास अपने जीवन और अपने परिवार की भलाई के अवसर उत्पन्न होते हैं. यह गरीबी दर में कमी लाने में योगदान देता है और ग्रामीण समुदायों के भीतर संसाधनों का अधिक न्यायसंगत वितरण की व्यवस्था करता है.

सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण: ग्रामीण महिला उद्यमियों के लिए एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

विश्वास का निर्माण: सामाजिक बाधाओं को तोड़ना और कारोबार में महिलाओं के बारे में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है. मेंटरशिप कार्यक्रम और सफलता की कहानियाँ इच्छुक उद्यमियों को प्रेरित और सशक्त बना सकती हैं.

कानूनी और नियामक बाधाओं को दूर करना: नौकरशाही प्रक्रियाओं को सरल बनाना, कारोबार लाइसेंस और परमिट तक आसान पहुंच प्रदान करना और कानूनी ढांचे में लिंग-आधारित भेदभाव को दूर करने से महिला उद्यमियों के लिए अधिक सक्षम वातावरण बन सकता है.

कौशल विकास में निवेश: कारोबारिक प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम और कारोबार प्रबंधन कौशल विकास प्रदान करना महिलाओं को कारोबार की दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और आत्मविश्वास प्रदान कर सकता है.

प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे तक पहुंच को सुविधाजनक बनाना: किफायती इंटरनेट पहुंच, डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण और किफायती प्रौद्योगिकी उपकरण प्रदान करके डिजिटल विभाजन को पाटना महिलाओं को अपने कारोबारों के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए सशक्त बना सकता है.

सहयोग और नेटवर्किंग को बढ़ावा देना: महिला उद्यमियों को आपस में जुड़ने, संसाधनों को साझा करने और एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने के लिए मंच बनाने से समुदाय और समर्थन की भावना को बढ़ावा मिल सकता है.

परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक: ग्रामीण महिला उद्यमिता में निवेश केवल संख्या नहीं है; यह जीवन, समुदाय और राष्ट्र को

बदलने से जुड़ा विषय है. जब महिलाओं को आर्थिक परिवर्तन का एजेंट बनने के लिए सशक्त बनाया जाता है, तो इसके अनेक सकारात्मक लाभ प्राप्त होते हैं.

बेहतर मातृ स्वास्थ्य और बाल कल्याण: अध्ययनों से पता चला है कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से उनके परिवारों के लिए बेहतर स्वास्थ्य देखभाल परिणाम प्राप्त होते हैं, जिसमें बच्चों के लिए बेहतर पोषण और शैक्षिक अवसर शामिल हैं.

लैंगिक असमानता में कमी: जैसे-जैसे महिलाएं आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक मान्यता प्राप्त करती हैं, पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं बदलने लगती हैं, जिससे एक अधिक न्यायसंगत समाज का मार्ग प्रशस्त होता है.

बेहतर सामाजिक विकास: ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधि बढ़ने से शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार होता है, जिससे समुदायों के समग्र कल्याण में वृद्धि होती है.

सतत विकास: महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबार अक्सर पर्यावरणीय स्थिरता और नैतिक प्रथाओं को प्राथमिकता देते हैं, जो सभी के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य में योगदान करते हैं.

अब समाज में परिवर्तन का समय आ गया है. अब समय आ गया है कि ग्रामीण महिला उद्यमियों को अपवाद के रूप में नहीं, बल्कि आदर्श के रूप में देखा जाए. अब समय आ गया है कि वे अपनी क्षमता को उजागर करें और उन्हें शताब्दियों के अंधियारों से बाहर निकाल कर प्रगति के संवाहक में बदलते हुए देखें, जिससे न केवल उनका अपना जीवन, बल्कि भारत का भविष्य भी बदल जाए.

इस यात्रा के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाज के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है. साथ मिलकर काम करके, हम एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं जहां ग्रामीण महिला उद्यमी फल-फूल सकें, जहां उनके सपने हकीकत बनें और जहां उनकी सफलता सभी के लिए अधिक समृद्ध, न्यायसंगत और टिकाऊ भविष्य का मार्ग प्रशस्त करे.

पिल्लि पृथ्वीराज
अं. का., हैदराबाद

ई-कारोबार के क्षेत्र में महिला उद्यमिता

हाल के वर्षों में महिला उद्यमिता और सशक्तिकरण में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, महिलाओं के नेतृत्व वाले ई-कॉमर्स कारोबार वैश्विक और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. इन महिलाओं ने उल्लेखनीय शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया है और वे न केवल फल-फूल रही हैं, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रही हैं, उद्यमी से रणनीतिकार, परोपकारी से सलाहकार बन गई हैं. ई-कॉमर्स के लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य में, ऑनलाइन बिजनेस प्लेटफॉर्म ने महिलाओं के लिए सफल बिजनेस लीडर बनने का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे उन्हें वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता हासिल करने का एक अनूठा अवसर मिला है. महिलाओं के नेतृत्व वाले ई-कॉमर्स कारोबार न केवल रोजगार पैदा कर रहे हैं बल्कि नवाचार को प्रोत्साहित कर रहे हैं और वंचित क्षेत्रों तक ई-कॉमर्स की पहुंच का विस्तार कर रहे हैं.

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत में कारोबार की एक दीर्घकालिक परंपरा के साथ उद्यमिता की एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत है. विभिन्न अवधियों में, भारत में उद्यमिता ने अर्थव्यवस्था और समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. प्राचीन काल में भारत कारोबार और वाणिज्य का केंद्र था. सिंधु घाटी सभ्यता सबसे प्रारंभिक ज्ञात उद्यमशील सभ्यताओं में से एक थी. मौर्य और गुप्त साम्राज्यों में एक समृद्ध कारोबार नेटवर्क और उद्यमिता गतिविधियाँ देखी गईं, जिसमें व्यापारी विशाल क्षेत्रों की यात्रा करते थे. मध्यकाल में मारवाड़ी, चेट्टियार और गुजराती जैसे उद्यमशील समुदायों का उदय हुआ. ये समुदाय कारोबार, वित्त और धन उधार देने में लगे हुए थे और उन्होंने भारत और उसके बाहर आर्थिक नेटवर्क बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. ब्रिटिश शासन द्वारा चिह्नित औपनिवेशिक युग ने भारत के उद्यमिता परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव लाया. शुरुआत में कारोबार के लिए स्थापित ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने धीरे-धीरे भारत की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण हासिल कर लिया. टाटा, बिड़ला और अंबानी सहित भारतीय व्यापारिक वर्ग इस अवधि के दौरान उभरा और औद्योगिकीकरण और राष्ट्र-निर्माण में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. स्वतंत्रता के बाद, भारत में राज्य-नियंत्रित और निजी उद्यमिता का मिश्रण देखा गया. आर्थिक नियोजन और विनियमन की सरकारी नीति ने निजी उद्यमिता के लिए गुंजाइश सीमित कर दी, लेकिन जे.आर.डी. टाटा और धीरूभाई अंबानी जैसे उल्लेखनीय उद्यमी अपने-अपने उद्योगों में अग्रणी बनकर उभरे. 1990 के दशक में, भारत में आर्थिक उदारीकरण हुआ, जिससे निजी उद्यम और विदेशी निवेश के लिए दरवाजे खुले. इस अवधि में सूचना प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स और सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमियों की एक नई नस्ल का उदय हुआ.

वर्तमान परिदृश्य : भारत में 63 मिलियन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.एम.ई.) हैं, जिनमें से लगभग 20 प्रतिशत महिलाओं के स्वामित्व वाले हैं. यह 22 से 27 मिलियन लोगों के लिए रोजगार पैदा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है. अनुमान बताते हैं कि महिला उद्यमिता में तेजी लाकर, भारत 30 मिलियन से अधिक महिला-स्वामित्व वाले उद्यम उत्पन्न कर सकता है, जिससे संभावित रूप से 150 से 170 मिलियन नौकरियां पैदा हो सकती हैं.

पिछले पाँच वर्षों में, 83 प्रतिशत भारतीय छोटे कारोबारों ने अपना परिचालन ऑनलाइन कर लिया है, जिनमें से 65 प्रतिशत अपने राजस्व का आधा हिस्सा ऑनलाइन बिक्री से उत्पन्न करते हैं. ई-कॉमर्स की ओर यह बदलाव तेजी से बढ़ते डिजिटल बाज़ार में महिला उद्यमियों के पनपने की अपार संभावनाओं को दर्शाता है.

भारत में ई-कॉमर्स का परिदृश्य पारंपरिक बाधाओं को खत्म करके महिला उद्यमिता की यात्रा को नया आकार दे रहा है. यह डिजिटल क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करता है, लिंग के मुकाबले कौशल और नवाचार को प्राथमिकता देता है. लचीलेपन और स्केलेबिलिटी की विशेषता वाले ऑनलाइन कारोबार, महिला उद्यमियों को अपनी शर्तों पर उद्यम प्रबंधित करने और गतिशील बाजार स्थितियों के अनुकूल होने के लिए सशक्त बनाते हैं. इसके अलावा, ई-कॉमर्स नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, जिससे महिलाओं को विविध वैश्विक दर्शकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्पादों या सेवाओं को अनुकूलित करने में मदद मिलती है. ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों की व्यापक पहुंच भौगोलिक बाधाओं को पार करती है, जिससे महिलाओं को न केवल स्थानीय बल्कि देश भर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ग्राहकों से जुड़ने की अनुमति मिलती है. महिला उद्यमी बड़े उत्साह के साथ इस डिजिटल अवसर का लाभ उठाने के लिए तैयार हैं.

चुनौतियां : ई-कॉमर्स क्षेत्र में महिला उद्यमियों को अक्सर लैंगिक पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है, जो फंडिंग सुरक्षित करने, मेंटरशिप तक पहुंचने और विश्वसनीयता स्थापित करने की उनकी क्षमता को प्रभावित करता है. यह भेदभाव नेतृत्व से लेकर अवसरों के पैमाने तक कारोबार के विभिन्न पहलुओं तक फैला हुआ है.

ई-कॉमर्स में महिला उद्यमियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच है. निवेशक अक्सर महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों को समर्थन देने से झिझकते हैं, जिससे उनके लिए बाजार में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ना और प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो जाता है.

महिला उद्यमियों को अक्सर व्यक्तिगत और पारिवारिक दायित्वों के साथ अपनी कारोबारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने में मदद की आवश्यकता होती है. इससे तनाव बढ़ सकता है और उनकी दीर्घकालिक सफलता पर असर पड़ सकता है.

ई-कॉमर्स उद्योग की पुरुष-प्रधान प्रकृति के कारण महिलाओं के लिए नेटवर्किंग के अवसर और मेंटरशिप चैनल सीमित हो गए हैं. मार्गदर्शन और समर्थन की यह कमी उनके कारोबार के विकास पथ में बाधा बन सकती है.

भविष्य की संभावनाएँ : अपने सहयोगी के रूप में ई-कॉमर्स की परिवर्तनकारी शक्ति के साथ, महिला उद्यमी भौगोलिक बाधाओं से मुक्त हो सकती हैं, विशाल ग्राहकवर्ग तक अपनी पहुंच का विस्तार कर सकती हैं और अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करके कारोबार परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ सकती हैं.

निष्कर्ष : 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षाओं के साथ, भारत एम.एस.एम.ई. क्षेत्र, विशेष रूप से महिला नेतृत्व वाले उद्यमों के डिजिटल परिवर्तन का समर्थन करने की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानता है. 'महिला-नेतृत्व युक्त विकास' महिलाओं को भारत की प्रगति में सबसे आगे ले जा सकता है.

इस महत्वपूर्ण क्षण में, भारत के पास प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाने, महिला उद्यमियों के लिए एक समावेशी और सशक्त वातावरण को बढ़ावा देने का अवसर है ताकि लगातार बढ़ते ई-कॉमर्स परिदृश्य में समृद्धि जारी रखी जा सके. कारोबार में महिलाओं की अप्रयुक्त क्षमता को उजागर करके, भारत खुद को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक ले जा सकता है और वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है. हम एक उज्ज्वल, अधिक न्यायसंगत और समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं जो वास्तव में महिला केंद्रित है.

रोहित एम
क्षे. का., तिरुवनंतपुरम

लघु उद्योग में महिला उद्यमिता

महिला उद्यमी प्रतिभाशाली एवं योग्य हैं और देश के विकास में सकारात्मक योगदान दे रहीं है. उद्यम के क्षेत्र में महिला अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं. भारतीय महिलाओं ने विभिन्न ब्रांड स्थापित कर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है जैसे बुटिक के क्षेत्र में विनिता जैन, शहनाज हर्बल की शहनाज हुसैन, ई-कॉमर्स के क्षेत्र में फाल्गुनी नायर इत्यादि. इसी के तहत महिलाएं ग्रामीण क्षेत्र के उद्यम में भी भागदारी कर रही हैं.

पूँजी विनियोग की सीमा के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है कि औद्योगिक इकाई किस क्षेत्र में आती है, जिसका निर्धारण निम्न आधार पर होता है:-

(क) निर्माण उद्योग:

(1) सूक्ष्म उद्योग - जहां प्लांट मशीनरी में निवेश 25 लाख रुपए से अधिक नहीं होता है.

(2) लघु उद्योग - जहाँ प्लांट एवं मशीनरी में निवेश 25 लाख रुपए से अधिक लेकिन 5 करोड़ रुपए से कम होता है.

(3) मध्यम उद्योग - जहां प्लांट एवं मशीनरी में निवेश 5 करोड़ रुपए से अधिक, लेकिन 10 करोड़ रुपए से कम होता है.

(ख) सेवा उद्योग:

(1) सूक्ष्म उद्योग, जहाँ उपकरणों में निवेश 10 लाख रुपए से आगे नहीं बढ़ता है.

(2) लघु उद्योग, जहाँ उपकरणों में निवेश 10 लाख रुपए से अधिक, लेकिन 2 करोड़ रुपए से अधिक नहीं है.

(3) मध्यम उद्योग, जहाँ उपकरणों में निवेश 2 करोड़ रुपए से अधिक, लेकिन 5 करोड़ रुपए से कम हो.

लघु उद्योग में महिला उद्यमिता की स्थिति एवं योगदान -

आज विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को अपेक्षाकृत विशेष पहचान मिल रही है. उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी व तरक्की के रास्ते आज बढ़ते जा रहे हैं.

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट 2022-2023 के अनुसार, सूक्ष्म क्षेत्र 630.52 लाख अनुमानित उद्यमों के साथ एम.एस.एम.ई. की कुल अनुमानित संख्या में सूक्ष्म क्षेत्र की हिस्सेदारी 99% से अधिक है. लघु क्षेत्र का 3.31 लाख और मध्यम क्षेत्र का 0.05 लाख अनुमानित एम.एस.एम.ई. का योगदान कुल अनुमानित एम.एस.एम.ई. का क्रमश: 0.52% और 0.01% है. एम.एस.एम.ई. की अनुमानित संख्या 633.88 में से, 324.88 लाख एम.एस.एम.ई. (51.25%) ग्रामीण क्षेत्र में हैं और 309 लाख एम.एस.एम.ई. (48.75%) शहरी क्षेत्रों में हैं.

इसी क्रम में रिपोर्ट में एम.एस.एम.ई. के पुरुष/ महिला स्वामित्व की बात भी उल्लिखित है, जिसके अनुसार 633.88 एम.एस.एम.ई. में से, 608.41 लाख (95.98%) एम.एस.एम.ई. मालिकाना संस्थाएं थीं. मालिकाना एम.एस.एम.ई. के स्वामित्व में पुरुषों का वर्चस्व था. इस प्रकार, स्वामित्व के लिए समग्र रूप से एम.एस.एम.ई. में पुरुषों के पास 79.63% उद्यम हैं, जबकि 20.37% स्वामित्व वाले महिला उद्यम हैं. हालाँकि, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इस पैटर्न में कोई महत्वपूर्ण विचलन नहीं था तथापि शहरी क्षेत्रों में पुरुष स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रभुत्व ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में थोड़ा अधिक था (77.76% की तुलना में 81.58%).

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में (पुरुष / महिला स्वामित्व) उद्यमों का वितरण.

क्षेत्र	महिला	पुरुष
ग्रामीण	77.76%	22.24%
शहरी	81.58%	18.42%
कुल	79.63%	20.37%

पुरुष / महिला स्वामित्व उद्यमियों वाले उद्यमों का क्षेत्रवार विवरण

क्षेत्र	महिला	पुरुष
सूक्ष्म	79.56%	20.44%
लघु	94.74%	5.26%
मध्यम	97.33%	2.67%
कुल	79.63%	20.37%

किसी अर्थव्यवस्था में एम.एस.एम.ई. क्षेत्र के सफल विकास का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक नए एम.एस.एम.ई. के खुलने का डाटा है. यह एक अर्थव्यवस्था में ऐसी इकाइयों के खुलने और विकास के लिए अनुकूल माहौल को दर्शाता है और साथ ही अर्थव्यवस्था के व्यापक अर्थशास्त्र में उद्यमिओं के उच्च मनोबल को दर्शाता है. उद्यम पोर्टल पर 31 दिसम्बर, 2022 तक पंजीकृत उद्यमों के लिंगवार विवरण के अनुसार कुल पंजीकृत उद्यमों में से 19% उद्यम महिलाओं के नाम पर पंजीकृत हैं.

भारत में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई सरकारी योजनाएं शुरू की गई हैं, यथा :-

मुद्रा योजना

मुद्रा ऋण योजना भारत में एक सरकारी पहल है जिसका उद्देश्य उद्यमिता को बढ़ावा देना और सूक्ष्म और लघु उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है. इस योजना के अंतर्गत महिला उद्यमियों पर विशेष ध्यान दिया गया है. महिलाओं के लिए मुद्रा ऋण भी आसान नियमों और शर्तों पर उपलब्ध हैं, 10 लाख रुपए तक के ऋण के लिए किसी गारंटी की आवश्यकता नहीं है. यह योजना महिला उद्यमियों को कम ब्याज दरें प्रदान करती है. महिलाओं द्वारा संचालित और/या स्वामित्व वाले सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए 85% सी.जी.टी.एम.एस.ई. गारंटी कवर उपलब्ध है.

स्टैंड-अप इंडिया योजना

स्टैंड-अप इंडिया योजना एक सरकारी योजना है, जिसका उद्देश्य महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले अन्य समुदायों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देना है. ग्रीनफील्ड कारोबार की स्थापना के लिए प्रत्येक बैंक शाखा द्वारा कम से कम एक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उधारकर्ता और कम से कम एक महिला को बैंक ऋण प्रदान करता है. गैर-व्यक्तिगत फर्मों के मामले में, एक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति या महिला उद्यमी के पास कम से कम 51% स्वामित्व और बहुमत हिस्सेदारी होनी चाहिए. इस योजना के तहत महिला उद्यमियों को अपना छोटा कारोबार शुरू करने या विस्तार करने के लिए ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक का ऋण मिल सकता है.

महिला कॉयर योजना

महिला कॉयर योजना (एम.सी.वाई) का उद्देश्य उचित कौशल विकास प्रशिक्षण के बाद कम कीमतों पर कताई उपकरण प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाना है. इस योजना के तहत महिला उद्यमियों को कॉयर प्रसंस्करण के लिए उपकरण और मशीनरी की लागत का 75% तक सब्सिडी मिल सकती है. यह योजना परियोजना लागत के 25% तक मार्जिन मनी सब्सिडी भी प्रदान करती है.

प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पी.एम.ई.जी.पी.) उद्यम शक्ति पोर्टल

कम लागत वाले उत्पाद और सेवाएं बनाकर सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एम.एस.एम.ई. मंत्रालय द्वारा इस योजना को प्रारंभ किया गया था. यह कारोबार योजना, ऊष्मायन सुविधाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, परामर्श, बाजार अनुसंधान आदि हेतु सहायता प्रदान करता है. ₹25 लाख की अधिकतम लागत वाली परियोजनाएं इस योजना के लिए पात्र हैं. ₹10 लाख विशेष रूप से सेवा-आधारित परियोजनाओं के लिए आवंटित किए गए हैं. पहल के ऑनलाइन पोर्टल ने महिलाओं को उनके घरों की सीमा से परे सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

महिला उद्यमों का आर्थिक सशक्तिकरण और महिलाओं द्वारा स्टार्ट-अप

यह कौशल विकास और उद्यमी मंत्रालय की योजना है, जो महिला सूक्ष्म उद्यमियों को नए कारोबार शुरू करने और मौजूदा कारोबारों को बढ़ाने के लिए एक त्वरित कार्यक्रम प्रदान करती है. यह पहल अब असम, राजस्थान और तेलंगाना राज्यों में संचालित है.

कारोबार संबंधित उद्यमिता सहायता और विकास (ट्रेड)

इस पहल का उद्देश्य अन्य चीजों के अलावा कारोबार, वस्तुओं और सेवाओं से जुड़ी गतिविधियों को वित्त (एनजीओ के माध्यम से), प्रशिक्षण, विकास और परामर्श प्रदान करके महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है. गैर-सरकारी संगठनों को महिलाओं के लक्षित समूहों में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए, ऋण देने वाली एजेंसी द्वारा निर्धारित कुल परियोजना लागत का 30% तक भारत सरकार से अनुदान के रूप में सहायता मिलती है. परियोजना लागत का शेष 70% ऋण देने वाली एजेंसी द्वारा परियोजना में उल्लिखित गतिविधियों को पूरा करने के लिए ऋण के रूप में प्रदान किया जाता है.

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा प्राप्त, प्रशिक्षित, तकनीकी दृष्टि से मजबूत और पेशेवर दक्ष महिलाओं को स्वयं का उद्यम स्थापित करने तथा संचालित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए तथा नवीन महिला उद्यमियों को वित्त सुविधा एवं तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी निपुणता का उपयोग महिला उद्यम के क्षेत्र में करना चाहिए. महिला उद्यमिता इस बात का प्रमाण है कि जिन क्षेत्रों में अब तक पुरूषों का वर्चस्व था महिलाओं ने भी अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए भागीदारी प्रदान की है. कारोबारिक क्षेत्र में महिलाओं की प्रगति निश्चित ही देश के लिए आर्थिक एवं सामाजिक रूप से लाभकारी सिद्ध होगी.

कीर्ति वर्मा
क्षे. का., गाजीपुर

स्वंय सहायता समूह

छत्तीसगढ़ के राजनांदगाँव जिले में माँ बंगलेश्वरी जनहितकारी समिति कार्यान्वित है. इसकी कर्ता-धर्ता श्रीमती फूलबासन बाई यादव जी हैं. भारत सरकार ने उनके कार्यों को देखते हुए श्रीमती फूलबासन बाई जी को "पद्मश्री" की उपाधि से सम्मानित किया है. यह समिति महिला सशक्तिकरण का सर्वोत्तम उदाहरण है. इसके अंतर्गत लगभग 10,000 स्वंय सहायता समूह सक्रिय हैं जिनसे 2 लाख से ज्यादा महिलाएं जुड़ी हुई हैं. इससे पता चलता है कि करीब 2 लाख परिवारों की महिलाएं इनकी सहायता से स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनी हैं.

भारत सरकार स्वंय सहायता समूहों में प्रत्येक महिला की वार्षिक आय को वर्ष 2024 में 1 लाख रु तक बढ़ाने का लक्ष्य लेकर चल रही है. स्वंय सहायता समूह एक अनौपचारिक संघ होता है जिसमें महिलाएं स्वेच्छा से एक साथ जुड़ती हैं. इसमें समान्यत: एक ही सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के सदस्य एक दूसरे के सहयोग से अपनी साझा समस्याओं का समाधान करते हैं.

समूह के सदस्य सामूहिक नेतृत्व और आपसी चर्चा के माध्यम से संघर्षों को हल करते हैं. इस समूह के सदस्य अपनी बचत बैंक में जमा करते हैं. बैंक द्वारा उन्हें अपनी सूक्ष्म इकाई / उद्यम शुरू करने हेतु कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाता है. ऋण लेने वाले सदस्यों के लिए समूह की सामूहिक गारंटी ली जाती है. देश में वित्तीय समावेशन पर एक व्यापक रिपोर्ट तैयार करने हेतु डॉ रंगराजन की अध्यक्षता में गठित एक समिति ने वित्तीय समावेशन की कमी के चार प्रमुख कारणों की पहचान की है जो निम्नलिखित हैं-

- संपार्श्विक सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थता
- खराब ऋण शोधन क्षमता
- संस्थानों की अपर्याप्तता
- कमजोर सामुदायिक नेटवर्क

इन कमियों से समाधान स्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में ये समूह ऋण प्राप्त करने में मदद करते हैं. इस प्रकार गरीबी उन्मूलन एवं सामाजिक पूंजी निर्माण में मदद करते हैं, स्वरोजगार को बढ़ावा देकर महिलाओं को सशक्त बनाते हैं. इसके अतिरिक्त इस माध्यम से साक्षरता स्तर में सुधार, स्वास्थ देखभाल और परिवार नियोजन जैसे पहलुओं में सुधार किया जा सकता है. इन समूहों से समाज में दहेज प्रथा, शराब आदि कुप्रथाओं को रोकने में भी मदद मिलती है.

यह प्रमाणित है कि समाज में इन समूहों से जुड़ने वाली महिलाओं की स्थिति में सुधार के साथ परिवार में उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है और उनके आत्मसम्मान में भी वृद्धि हुई है. इन समूहों से महिलाएं सशक्त बनती हैं और उनमें नेतृत्व कौशल विकसित होता है. प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को ऋण देने के मानदंड और रिटर्न का आश्वासन बैंको को इन समूहों को ऋण देने हेतु प्रोत्साहित करता है. नाबार्ड द्वारा अग्रणी स्वंय सहायता समूह-बैंक लिंकेज कार्यक्रम ने ऋण तक पहुँच को आसान बना दिया है तथा पारंपरिक साहूकारों एवं अन्य गैर - संस्थागत स्रोतों पर निर्भरता कम हुई है. इससे सूक्ष्म-उद्दमों की स्थापना में सहायता मिलती है.

स्वंय सहायता समूहों के इतने महत्व के बावजूद इनकी कुछ कमियाँ भी हैं. अधिकांश समूह नवाचरों और कौशल का उपयोग करने में असमर्थ हैं क्योंकि इनमें नई तकनीकी से संबंधित जागरूकता सीमित है और कौशल भी बहुत ज्यादा नहीं है. अक्सर यह भी पाया गया है कि समूहों को कारोबार से प्राप्त होने वाली आय को इकाइयों में उचित रूप से निवेश नहीं किया जाता है बल्कि धन को अन्य व्यक्तिगत और घरेलू उद्देश्यों, जैसे विवाह, घर-निर्माण आदि के लिए उपयोग कर लिया जाता हैं. इसके अलावा प्रशिक्षण की सुविधाएं भी अपर्याप्त हैं. यह भी देखने में आता है कि प्रदान की गई वित्तीय सहायता अपर्याप्त है.

इन सब के बावजूद महिला सशक्तिकरण में स्वंय सहायता समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं अब आय के स्वतंत्र स्रोत बनाने में सक्षम हैं. सरकारी योजनाओं को भी विभिन्न स्वंय सहायता समूहों के माध्यम से समाज में लागू किया जा सकता है. इससे पारदर्शिता और दक्षता दोनों में सुधार होगा. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में महिलाएं अपनी स्वाधीनता, अधिकार, सुरक्षा और सामाजिक स्थिति के प्रति अधिक जागरूक हैं. लेकिन कुछ तबके अब भी वंचित हैं. इसीलिए यह जरूरी है कि जल्द से जल्द समाज के ग्रामीण और गरीब तबके की महिलाएं भी इन स्वंय सहायता समूहों से जुड़कर समाज में अपनी स्थिति को मज़बूत करें. उनके भी अधिकारों और स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सके.

यह चार पंक्तियाँ देश की हर स्त्री को चरितार्थ करती हैं -:

दुर्गा के नौ रूप हैं मुझमें समाहित,
शिव भी नहीं है मुझसे रहित.
शुभ्र, स्निग्ध, निर्मल जल की सरिता सी,
मैं हूँ ईश्वर की सुंदर 'कविता' सी।।

कविता श्रीवास्तव
उप अंचल प्रमुख,
अं. का., जयपुर

महिला उद्यमिता और स्वयं सहायता समूह

महिलाएँ भारत की 1.2 बिलियन की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें बड़े पैमाने पर आर्थिक गतिविधियों और निर्णय लेने में भाग लेने के साथ - साथ स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा आदि के संसाधनों तक पहुँच से बाहर रखा गया था.

रोजगार को लेकर सामाजिक बाधाओं को दूर करने और महिलाओं को स्वतंत्र और सक्षम बनाने के लिए उद्यमिता एक अभिनव और सरल उपकरण है. उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने मुद्रा योजना, उद्योगिनी योजना, अन्नपूर्णा योजना और स्टैंड अप इंडिया जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं.

भारत में महिला उद्यमियों के लिए बेहतर माहौल बनाने के प्रयासों के बावजूद, वित्त की व्यवस्था करना सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है. हालाँकि परिवार के पास खर्च करने योग्य आय हो सकती है, लेकिन इसके प्रमुख सदस्य अक्सर एक महिला की वित्तीय स्वतंत्रता के सपने में योगदान देने से बचते हैं. इसके अलावा, भले ही महिलाएं ऋण के लिए आवेदन करने में सफल हो जाती हैं, लेकिन जिस संपार्श्विक के बदले यह पेशकश की जाती है, जैसे कि संपत्ति, अक्सर उनके पति के नाम पर होती है, जो आगे चलकर उद्यम शुरू करने में बाधा बन जाती हैं. सामाजिक बाधाओं के साथ-साथ, वित्तीय पहुंच न होने के कारण महिलाओं की महत्वाकांक्षाएं अधूरी रह जाती हैं तथा सामाजिक क्षेत्र में एजेंसी या गतिशीलता हासिल करके आत्मनिर्भर बनने के उनके अवसर सीमित हो जाते हैं.

ऐसे परिदृश्य में, स्वयं सहायता समूह उन महिला उद्यमियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य कर सकते हैं, जिनके पास उद्यम शुरू करने की इच्छा तो है लेकिन उनके पास अपने सपने को पूरा करने के लिए संसाधन और इसके लिए आवश्यक वित्त नहीं है. स्वयं सहायता समूह में महिलाओं का एक छोटा समूह शामिल होता है जो नियमित मौद्रिक योगदान करने के लिए एक साथ आते हैं. महत्वपूर्ण सूक्ष्म-वित्त प्रणालियों के रूप में उभरते हुए, स्वयं सहायता समूह ऐसे मंच के रूप में काम करते हैं, जो महिलाओं के बीच एकजुटता को बढ़ावा देते हैं, उन्हें स्वास्थ्य, पोषण, लैंगिक समानता और लैंगिक न्याय के मुद्दों पर एक साथ लाते हैं. एसएचजी ने पहले से ही ग्रामीण महिलाओं के कौशल को बढ़ाकर और उन्हें विभिन्न उद्यमशीलता गतिविधियों में शामिल होने का मौका देकर उद्यमशीलता की प्रवृत्ति विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

स्वयं सहायता समूह महिला उद्यमियों को उनके कारोबार को बनाए रखने के लिए सूक्ष्म ऋण प्रदान करते हैं, साथ ही उनके लिए बेहतर एजेंसी और निर्णय लेने के कौशल विकसित करने के लिए एक वातावरण भी बनाते हैं. भारत में, एसएचजी आंदोलन 1980 के दशक में शुरू हुआ, जब कई गैर-सरकारी संगठनों ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब समुदायों को संगठित और उन्हें सामाजिक तथा वित्तीय सहायता के लिए औपचारिक चैनल की पेशकश की. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक द्वारा कम संख्या में ऐसे समूहों को बैंकों से जोड़ने में इस कार्यक्रम को गति मिली. स्वयं-सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम नामक इस क्रांतिकारी पहल ने समूह के सदस्यों को, जिनमें से कई के पास पहले कभी कोई बैंक खाता नहीं था, टिकाऊ और मापनीय तरीके से औपचारिक वित्तीय सेवाओं से जोड़ा.

स्वयं सहायता समूह आज अत्यधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि उनके सूक्ष्म ऋण प्रावधान क्षेत्रीय असंतुलन के साथ-साथ सूचना विषमता को दूर करने में मदद करते हैं. इस प्रकार महिलाओं के लिए संसाधनों तक पहुंच के मामले में एक समान अवसर प्रदान करते हैं. ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा किए गए बहुआयामी आई.एफ.एम.आर. अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों की आजीविका पर प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है और इस प्रकार उन घरों में उपभोग, व्यय और बचत पैटर्न पर प्रभाव पड़ा है, जिनमें महिलाएं इसका हिस्सा हैं. अध्ययन में पाया गया कि स्वयं सहायता समूह से सहायता प्राप्त महिलाओं में नियमित आधार पर बचत करने की संभावना 10% अधिक थी, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक सशक्तिकरण हुआ. साथ ही वे अगली पीढ़ी के लिए बेहतर भविष्य की दिशा में काम कर रही हैं.

स्वयं सहायता समूह ने जो क्रांतिकारी गति पैदा की है, उसने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की यात्रा में आत्म-आश्वासन की एक महत्वपूर्ण भावना दी है. उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, वैश्विक स्तर पर निगमों और फाउंडेशनों ने महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण हासिल करने में मदद करने के लिए स्वयं सहायता समूह के नेतृत्व वाले कार्यक्रम तैयार किए हैं. स्वयं सहायता समूह द्वारा अपने लाभार्थियों के साथ बनाए गए विश्वास के मूल में बंधक-मुक्त सूक्ष्म-ऋण के साथ, महिलाओं के लिए सामाजिक-आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए भारत के सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक हैं.

सीमा प्रियदर्शिनी
क्षे. का., भुवनेश्वर

महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता

महिला उद्यमिता में एक समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की शक्ति होती है. उद्यमिता के माध्यम से महिलाएं नए क्षेत्रों में पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सकती हैं. यह समर्थन, प्रेरणा और नेतृत्व की भूमिका भी निभाती है. आत्मनिर्भरता एक महत्वपूर्ण चरण है जो महिलाओं को स्वतंत्र बनाती है. आत्मनिर्भर महिलाएं समाज में अपना स्थान बना सकती हैं और स्वतंत्रता के साथ अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना कर सकती हैं.

महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की पहलों में शिक्षा का विशेष महत्व है. शिक्षित महिलाएं अपनी स्थिति को समझती हैं और समाज में अपने अधिकारों का समर्थन कर सकती हैं. उन्हें नई विचारशीलता, कौशल, और स्वाधीनता की अनुभूति होती है, जो आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने में मदद करती है. साथ ही, समाज में महिलाओं के लिए समर्थन साधने के लिए योजनाएं आवश्यक हैं. सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं के समर्थन और प्रोत्साहन के लिए योजनाएं बनाई जा रही हैं जो महिलाओं को उद्यमिता की ओर बढ़ने में मदद कर सकती हैं.

उद्यमिता में सहायक भूमिका निभाने वाले संगठनों और अनुसंधान केंद्रों का महत्वपूर्ण योगदान है. इन संगठनों के माध्यम से महिलाएं नौकरी प्राप्त करने, अपने कारोबार की शुरुआत करने और बढ़ते हुए उद्यम में सक्रिय होने का अवसर पा सकती हैं. सामाजिक रूप से महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए समर्थन और बदलाव की आवश्यकता है. समाज में महिला सशक्तिकरण से ही समृद्धि हो सकती है और वे समृद्धि और विकास की ओर एक कदम और बढ़ा सकती हैं.

महिला उद्यमिता एक समर्थनशील और सकारात्मक समाज की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है. उद्यमिता की प्रक्रिया में महिलाएं नए क्षेत्रों में कदम से कदम मिलाकर अपनी सक्षमता को परिकल्पित कर सकती हैं. उन्हें नए विचार और नए दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं, जो उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं. महिला उद्यमिता का संकल्प अधिक से अधिक महिलाओं को कारोबार, उद्योग और सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रेरित करता है.

महिला उद्यमिता की शुरुआत आत्मविश्वास और नेतृत्व की भावना से होती है. अगर उद्यमिता की ऊर्जा को उत्तेजित करने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया जाए, तो वे स्वयं को नेतृत्व की भूमिका में पाएंगी.

आत्मनिर्भरता महिलाओं के लिए स्वतंत्रता और स्वाधीनता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है. आत्मनिर्भरता का मतलब है कि महिलाएं अपने जीवन को स्वयं नियंत्रित करती हैं और वे आत्म-समर्थ होकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना कर सकती हैं. शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने में मदद करती है. एक शिक्षित महिला अपने कौशल और ज्ञान का सही तरीके से उपयोग करके अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करने में सक्षम होती है.

शिक्षा महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करती है, यथा उद्योग, विज्ञान और कला. आत्मनिर्भरता में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकसित करना और साथ ही तकनीकी और व्यावसायिक क्षमताओं का सही उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है.

महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता दोनों ही महिलाओं की समृद्धि और स्वाधीनता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. महिला उद्यमिता एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जो महिलाओं को नए और अद्वितीय क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है. इसके माध्यम से महिलाएं नए विचार, नए कारोबारिक मॉडल और नई तकनीकी को अपना सकती हैं. उद्यमिता महिलाओं को आत्मविश्वास और नेतृत्व की भूमिका में उत्तेजित करती है, जो उन्हें समाज में अधिक प्रभावी बनाता है. आत्मनिर्भरता महिलाओं को स्वतंत्र बनाती है, जिससे वे अपने जीवन को स्वयं नियंत्रित कर सकती हैं.

आत्मनिर्भर महिलाएं अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सक्रिय रूप से काम करती हैं और समाज में अपनी पहचान बनाती हैं. यद्यपि दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता एक-दूसरे का सहारा होते हैं. जब महिला उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाएं काम करती हैं, तो वे आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ती हैं. उद्यमिता महिलाओं को स्वयं के कारोबार या उद्योग स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे वे अपनी आत्मनिर्भरता को बढ़ा सकती हैं. साथ ही, आत्मनिर्भरता भी महिला उद्यमिता को समर्थन प्रदान करती है. जब महिलाएं स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती हैं और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करती हैं, तो यह उद्यमिता को भी बढ़ाता है. इस प्रकार, महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता दोनों ही एक-दूसरे की पूरक हैं और समाज में महिलाओं की स्थिति को मजबूती से बनाए रखने में मदद करती हैं.

उद्यमी महिला और आत्मनिर्भरता का सम्बंध सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सुधारों के साथ होता है और इससे भविष्य में कई प्रभाव हो सकते हैं. उद्यमी महिलाओं द्वारा स्थापित किए गए कारोबार और उद्योग से नए रोजगार के अवसर बन सकते हैं, जिससे आर्थिक समृद्धि हो सकती है. आत्मनिर्भर महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकसित कर सकती हैं और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद कर सकती हैं.

उद्यमी महिलाएं समाज में नए विचार और सुधार ला सकती हैं और समाज को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ा सकती हैं. आत्मनिर्भरता से समर्थ महिलाएं समाज में स्वतंत्रता के साथ सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं और अपनी स्थिति में सुधार कर सकती हैं. उद्यमी महिलाएं अपनी सफलता के कारण समाज में एक प्रेरणा स्रोत बन सकती हैं, जिससे अन्य महिलाएं भी उद्यमिता की ओर प्रवृत्त हो सकती हैं. आत्मनिर्भर महिलाएं शिक्षा के माध्यम से अपनी क्षमताओं को सही तरीके से विकसित कर सकती हैं.

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में सरकारी योजनाएं महिलाओं को आर्थिक रूप से समर्थन प्रदान करके उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद कर सकती हैं. उद्यमी महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना सकती हैं, जैसे कि विज्ञान, तकनीक, साहित्य, मीडिया इत्यादि. आत्मनिर्भरता से महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय होकर समाज के विकास में योगदान दे सकती हैं.

ममता चौहान
क्षे. का., पुणे मेट्रो

क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग विषयों पर

नुक्कड़ नाटकों का आयोजन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा विजयवाडा तथा विशाखपट्टणम अंचल (आन्ध्र प्रदेश राज्य), हैदराबाद अंचल (तेलंगाना राज्य), चेन्नै अंचल (तमिलनाडु राज्य), बेंगलूरु अंचल (कर्नाटक राज्य) और भुवनेश्वर अंचल (ओडिशा राज्य) में आउटरीच कार्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय भाषा में नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया. नुक्कड़ नाटक के आयोजन स्थल पर क्षेत्रीय भाषा में बैंक के उत्पादों के पैम्प्लेट, ब्रोशर आदि का वितरण किया गया. नुक्कड़ नाटक के दौरान सभी आयोजन स्थलों में वित्तीय समावेशन, वसूली उपाय, ओटीएस योजना, नारी शक्ति योजना, कासा, कृषि ऋण उत्पाद, सरकारी योजनाएं, अनर्जक खातों का निपटान, स्वयं सहायता समूह, बैंक के डिजिटल उत्पाद, मोबाइल बैंकिंग एवं व्योम ऐप की विशेषताओं के बारे में दर्शकों को जानकारी प्रदान की गई. इस आयोजन में शाखा के अधिकारियों के अलावा अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यपालक और ग्राम सरपंच भी उपस्थित रहे.

विजयवाड़ा अंचल

विशाखपट्टणम अंचल

बेंगलूरु अंचल

भुवनेश्वर अंचल

हैदराबाद अंचल

चेन्नै अंचल

महिला उद्यमिता – चुनौतियां और समाधान

महिला उद्यमिता, एक ऐसा शब्द है जो समृद्धि, स्वतंत्रता और समाज में बदलाव की ओर महिलाओं को प्रेरित करता है. यह एक ऐसा प्रयास है जो महिलाओं को अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करने, स्वतंत्रता से अपना कारोबार चलाने और समाज में अपनी पहचान बनाने का एक माध्यम प्रदान करता है. महिला उद्यमिता वैश्विक रूप से बढ़ रही है जो आर्थिक विकास, नवाचार और रोजगार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है.

आज के समय में महिलाएं हर क्षेत्र में अपना स्थान बनायी हुई हैं और पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है. किरण शॉ (बायोकॉन), उपासना टाकु (मोबिक्विक), फाल्गुनी नायर (नायका), निसाबा गोदरेज (गोदरेज कन्जूमर प्रोडक्ट्स) जैसी कुछ प्रमुख महिला उद्यमी हैं जिन्हें पुरुष और महिलाएं दोनों अपना आदर्श मानते हैं. तथापि महिला उद्यमिता से संबंधित कुछ सामान्य चुनौतियां हैं जिनसे महिला उद्यमी को निपटना होता है.

लैंगिक रूढ़िवादिता एवं पूर्वाग्रह: पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को हमेशा से ही लैंगिक असमानता का दंश झेलना पड़ा है. उनके प्रति समाज में पूर्वधारणा बनी रहती थी. समाज की नकारात्मक मानसिकता उनकी उद्यमिता क्षमता की सबसे बड़ी बाधा रही है. इस प्रकार की रूढ़िवादी मानसिकता को तोड़ने के लिए समाज में जागरूकता, शिक्षा और समावेश की भावना को बढ़ावा देने की आवश्यकता है. सफल उद्यमियों के परामर्श कार्यक्रम के माध्यम से महिला उद्यमियों को मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान किया जा सकता है.

पारिवारिक प्रतिबंध की समस्या और कार्य संतुलन: महिलाओं को अपने परिवार के सदस्यों के साथ अधिक समय बिताने की उम्मीद होती है. उन्हें कारोबारिक अवसरों का लाभ उठाने के लिए दूर की / लंबी यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है. इससे महिला उद्यमियों की कई परियोजनाएं अटक जाती हैं या उनके हाथ से निकल जाती हैं. उद्यमिता की मांगों को परिवार की जिम्मेदारियों के साथ संतुलित करना महिलाओं के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है. एक महिला, घर में कई भूमिकाएं निभाती है. ऐसे में समाधान यह है कि महिला कारोबारी अपने परिवार के सदस्यों को यह समझाए कि जिस प्रकार पुरुष कार्य के संबंध में बाहर जाते हैं उसी प्रकार उसे भी यात्रा करनी होगी और वह काम से समझौता नहीं कर सकती है.

कार्यशील पूंजी की कमी: यह अक्सर कहा जाता है कि कारोबार में धन का महत्व उतना ही है जितना मानव शरीर के लिए भोजन का. यह किसी भी, बड़े या छोटे कारोबार के लिए आवश्यक है. महिलाएँ बार-बार यह साबित कर चुकी हैं कि वे बहुत योग्य हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश लोग इसे स्वीकार नहीं कर पाते हैं और महिला उद्यमी द्वारा स्थापित किए गए कारोबार में निवेश करने से हिचकिचाते हैं. यह भी दुखद है कि कई वित्तीय संस्थाएं महिलाओं को क्रेडिट योग्य मानती हैं फिर भी उन्हें ऋण से वंचित रखती हैं क्योंकि उन्हें यह भय रहता है कि वे कभी भी अपने कारोबार को छोड़ सकती हैं. सरकार ने इस क्षेत्र में काफी श्रेष्ठ कार्य किया है तथा महिला ऋण संबंधित कई योजनाएं लेकर आई है. कई वित्तीय संस्थाएं भी महिला विशेष ऋण उत्पाद लेकर आई हैं, जिनमें महिला उधारकर्ताओं को आसान किश्तों तथा सरल शर्तों पर ऋण प्रदान किया जाता है.

सूचना का अभाव: महिला उद्यमियों को आमतौर पर उनके लिए उपलब्ध अनुदान और आर्थिक प्रोत्साहन के रूप में उपलब्ध कारोबार ऋण योजनाओं के बारे में पता नहीं होता है. विभिन्न ऋण संबंधी योजनाओं की जानकारी के अभाव में उन्हें इनका लाभ नहीं मिल पाता है, जिससे उन्हें काफी नुकसान होता है. इंटरनेट की सुविधा के बाद सरकार द्वारा लागू की गई सभी योजनाएं अब हर जरूरतमंद को आसानी से उपलब्ध हैं.

प्रशिक्षण का अभाव: बड़े शहरों में समय - समय पर उद्यमिता कौशल विकास के लिए इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग दी जाती है. तथापि इनकी जानकारी महिला उद्यमियों को नहीं मिल पाती है. इस कमी को पूरा करने के लिए नियमित तौर पर अखबारों को पढ़ा जा सकता है क्योंकि अखबारों में समय - समय पर कारोबार प्रशिक्षण से संबंधित जानकारी प्रदान की जाती है. सरकार के सहयोग से एनजीओ और वित्तीय संस्थाएं कई प्रकार की रोजगार और उद्यमिता योग्य प्रशिक्षण देती हैं.

नेटवर्किंग और मेंटरशिप के अवसर: प्रभावशाली नेटवर्क और परामर्श अवसरों की सीमित पहुंच के कारण महिला उद्यमियों को अक्सर अपनी पेशेवर यात्रा में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. कई उद्योगों में स्थापित नेटवर्क और मेंटरशिप सर्कल स्वाभाविक रूप से समावेशी नहीं होते हैं, जिससे महिलाओं के लिए अनुभवी पेशेवरों, संभावित सहयोगियों और सलाहकारों से जुड़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है. पहुंच की यह कमी उनके पेशेवर विकास में बाधा उत्पन्न करती है, कौशल विकास में बाधा डाल सकती है और उद्यमिता की जटिलताओं से निपटने की उनकी क्षमता को सीमित कर सकती है. व्यावसायिक समुदायों में महिलाओं के बीच नेटवर्किंग, परामर्श कार्यक्रम और सहयोग के लिए मंच स्थापित करना आवश्यक सहायता प्रदान कर सकता है. अनुभवी उद्यमियों को महत्वाकांक्षी महिला अग्रणियों से जोड़ने वाले मेंटरशिप कार्यक्रम मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं और सशक्तिकरण को बढ़ावा दे सकते हैं.

बाज़ार पहुंच और दृश्यता: महिला उद्यमियों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक है बाजार तक पहुंच और दृश्यता प्राप्त करने में कठिनाई, विशेषकर उन उद्योगों में जहाँ ऐतिहासिक रूप से पुरुषों का वर्चस्व रहा है. बाज़ार में प्रवेश करने का प्रयास करते समय महिला उद्यमियों को अक्सर बाधाओं का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उनके कारोबारों को पुरुषों के नेतृत्व वाले कारोबारों के समान ध्यान या मान्यता नहीं मिल पाती है. दृश्यता की यह कमी उनकी विकास संभावनाओं में बाधा बन सकती है और नेटवर्किंग, सहयोग और कारोबार विस्तार के अवसरों को सीमित कर सकती है. इन समस्याओं से निपटने के लिए महिला-केंद्रित कारोबार एक्सपो, विविधता-प्रतिबद्ध निगमों के साथ साझेदारी और रणनीतिक डिजिटल मार्केटिंग जैसी पहल महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबारों की दृश्यता को बढ़ा सकती हैं, जिससे नए अवसर पैदा हो सकते हैं.

कुछ रणनीतिक समाधान हो सकते हैं, जिनके द्वारा महिला उद्यमिता की चुनौतियां का समाधान किया जा सकता है :-

नीतिगत प्रोत्साहन: सरकार और संगठनों को उन नीतियों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो उद्यमिता में लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं, जिनमें फंडिंग की उचित पहुंच, सहायक कार्यस्थल नीतियां और महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबारों के लिए प्रोत्साहन शामिल हैं.

शैक्षिक पहल: विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर महिलाओं के लिए उद्यमिता और नेतृत्व पर ध्यान केंद्रित करने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करने से उन्हें आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस किया जा सकता है.

उद्योग सहयोग: उद्योगों और महिलाओं के नेतृत्व वाले कारोबारों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करने से सलाह, साझेदारी और बाजार तक पहुंच बढ़ाने के रास्ते खुल सकते हैं.

वित्तीय समावेशन: वित्तीय संस्थानों को ऋण देने की प्रथाओं में लैंगिक भेदभाव को खत्म करने, अनुरूप वित्तीय उत्पादों की पेशकश करने और मजबूत वित्तीय नींव बनाने में महिला उद्यमियों का समर्थन करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम करना चाहिए.

नेटवर्किंग प्लेटफार्म: महिला उद्यमियों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म बनाने और बढ़ावा देने से सहयोग, मार्गदर्शन और विचारों के आदान-प्रदान की सुविधा मिल सकती है.

महिलाएं राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाती हैं. उनके अद्वितीय समर्पण और सामरिक सहयोग ने राष्ट्र को समृद्धि और प्रगति की दिशा में समर्थन प्रदान किया है. महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना न केवल समानता का मामला है, बल्कि आर्थिक विकास और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता भी है. नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं, वित्तीय संस्थानों और व्यापक समाज को शामिल करके एक ठोस प्रयास के माध्यम से, हम एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जहां महिला उद्यमियों को बाधाओं को दूर करने और कारोबार जगत में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए ज्यादा सशक्त बनाया जा सके. उद्यमिता में विविधता को अपनाने से न केवल महिलाओं को लाभ होता है बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था का समग्र ढांचा मजबूत होता है. ऐसा कारोबारिक परिदृश्य बनाना एक साझा ज़िम्मेदारी है, जहाँ हर उद्यमी को आगे बढ़ने और सफल होने का अवसर मिले.

आज देश की महिलाएं सभी क्षेत्रों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं. यही कारण है कि पुरुष-प्रधान सभी क्षेत्रों में महिलाओं की बड़ी भूमिका अब साफ-साफ दिखाई देने लगी है. महिलाएं जैसे-जैसे कारोबार में सफल होंगी उनका स्वयं पर विश्वास बढ़ेगा और अपने अंदर छिपी हुई प्रतिभा को पहचान सकेंगी. उद्यमियों को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उनमें किफ़ायती वित्त और प्रौद्योगिकी तक पहुँच प्रमुख है. इसे ध्यान में रखते हुए एम.एस.एम.ई. मंत्रालय द्वारा जमानत गारंटी योजना शुरू की गई है जिसके तहत सूक्ष्म और लघु उद्यमियों को जमानत मुक्त ऋण प्रदान किया जाता है. अंत में महिला उद्यमियों एवं महिला शक्तियों के प्रति मैं इन पंक्तियों को समर्पित करना चाहूँगा:-

हार कर बैठ जाना आसान है,
मुश्किल है हालातों से लड़ जाना.

गहरी है नदी संघर्ष की,
कठिन है उसे पार कर पाना.

सपने देखना तो आम बात है,
खास है उन्हें पूरा कर पाना.

मंजिल तो मिल ही जाती है एक दिन,
पर जरूरी है पहला कदम उठाना.

चेतन सराओगी
ज़ेड.एल.सी., पवई

महिला उद्यमिता विकास में बैंकों का योगदान

महिला सशक्तिकरण आज के गतिशील युग की अनिवार्यता बन गई है, क्योंकि किसी भी उन्नतिशील देश के लिए स्त्री-पुरुष असमानता का होना उचित नहीं माना जा सकता है.

भारत एक तेजी से बढ़ता हुआ देश है और जैसे-जैसे भारतीय समाज में साक्षरता तथा जागरूकता बढ़ रही है, वैसे-वैसे भारतीय महिलाओं की साक्षरता का स्तर भी बढ़ रहा है, परन्तु भारत के ग्रामीण क्षेत्र में आज भी महिला साक्षरता की स्थिति संतोषजनक नहीं मानी जाती है. अत: भारतीय महिलाओं के समुचित उत्थान के लिए उन्हें सशक्त बनाना आवश्यक हो गया है. एक स्वस्थ, शिक्षित तथा शक्तिशाली महिला ही स्वस्थ समाज तथा स्वस्थ भावी पीढ़ी का निर्माण कर सकती है.

महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया एक दीर्घकालीन तथा नियोजित प्रक्रिया होती है, इसलिए इस प्रक्रिया को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है. इस प्रक्रिया के तहत महिला को सशक्त बनाने के लिए सर्वप्रथम महिला को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना आवश्यक होता है. यदि कोई महिला आर्थिक रूप से सशक्त होती है तो उसे समाज में मान-सम्मान सहज रूप से मिलने लगता है, इसलिए यह कहना उचित होगा कि आर्थिक रूप से सशक्त महिला समाज में एक शक्तिशाली महिला के रूप में सम्मान प्राप्त करती है.

किसी भी महिला को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता एक श्रेष्ठ मार्ग है, अत: महिला को एक उद्यमी के रूप में विकसित करके उसे पहले आर्थिक रूप से फिर सामाजिक तथा राजनैतिक रूप से शक्तिशाली बनाया जा सकता है.

महिला उद्यमिता तेजी से आधुनिक भारत की पहचान बनती जा रही है, क्योंकि भारत के बड़े-बड़े महानगरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्र तक महिलाएँ अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं.

महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को उद्यमिता विकास के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि जब कोई महिला उद्यमी बन जाती है तो वह अपना स्वयं का कारोबार स्थापित करके समाज को भी सशक्त बनाती है. उद्यमिता के माध्यम से समाज में आय, उत्पादन, बचत के साथ-साथ कारोबार में भी वृद्धि होती है और पूँजी का निर्माण भी होता है. महिला उद्यमिता की राह आसान नहीं होती है. किसी भी महिला के लिए अपना स्वयं का उद्यम स्थापित करना, उत्पादन करना, उत्पादन को बाजार में बेचना आदि काम आसान नहीं होते हैं. ऐसी स्थिति में बैंकिंग व्यवस्था के माध्यम से महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में सफल बनाया जा सकता है.

महिलाओं को अपना स्वयं का उद्यम स्थापित करने के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है और भारतीय समाज में महिलाएँ आर्थिक रूप से इतनी सक्षम नहीं हो पाई हैं कि बिना किसी वित्तीय सहायता के अपना स्वयं का उद्यम स्थापित कर सके. अत: महिला उद्यमिता की प्रारंभिक आवश्यकता बैंकों के माध्यम से ही पूरी हो सकती है. बैंक महिला उद्यमिता के लिए सारथी के समान होते हैं जो महिलाओं के उद्यमिता रूपी रथ का सफलतापूर्वक संचालन करते हैं.

बैंकों द्वारा महिला उद्यमियों को उनकी आवश्यकता, क्षमता तथा ऋण चुकाने के सामर्थ्य के अनुसार ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है.

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में ऋण प्रदान करने के लिए निर्धारित की गई प्राथमिकताओं में महिला उद्यमिता को अब तेजी से महत्व दिया जा रहा है, इसलिए वर्तमान समय में महिला उद्यमिता विकास के लिए भारतीय बैंकों द्वारा अधिक से अधिक प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे-

1. महिलाओं के ऋण सम्बन्धित आवेदनों पर प्राथमिकता के आधार पर निर्णय लिए जा रहे हैं. बैंकों द्वारा महिला उद्यमिता से संबंधित निर्णय लेते समय दो तथ्यों को सबसे अधिक महत्व दिया जा रहा है, एक- समय पर ऋण उपलब्ध करवाना, दूसरा- पर्याप्त मात्रा में ऋण उपलब्ध करवाना. इस हेतु बैंकों में ऋण से सम्बन्धित निर्णय लेते समय बैंक के प्रबंधकों तथा ऋण अधिकारियों द्वारा महिला उद्यमियों को प्राथमिकता दी जा रही है.

2. महिला उद्यमिता के लिए समुचित प्रशिक्षण व्यवस्था आवश्यक है. अत: बैंकों द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं के साथ मिलकर काम किया जा रहा है और प्रशिक्षण की अवधि में महिला उद्यमियों को प्रभावशाली ऋण प्रस्ताव अथवा प्रोजेक्ट बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है. महिला उद्यमियों द्वारा बनाए जाने वाले ऋण प्रस्ताव प्रभावशील एवं त्रुटिरहित होने से उन्हें समय पर तथा पर्याप्त ऋण मिलेगा.

3. महिला उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ मार्गदर्शन भी आवश्यक होता है. इसलिए बैंक अधिकारी, महिला उद्यमियों के लिए समुचित प्रशिक्षण तथा मार्गदर्शन के लिए समय-समय पर विशेष प्रयास करते हैं.

4. महिला उद्यमिता तथा वित्तीय साक्षरता एक-दूसरे से सह-संबंधित होते हैं, क्योंकि वित्तीय रूप से साक्षर महिला आसानी से अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूर्ण करके पूँजी जुटा सकती है. इसलिए बैंक अधिकारियों द्वारा समय-समय पर महिलाओं को वित्तीय रूप से साक्षर बनाने के लिए विशेष कार्यक्रम, सेमिनार आदि संचालित किए जा रहे हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को वित्तीय रूप से साक्षर एवं जागरूक बनाने को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जा रही है. इसके लिए बैंक अधिकारी समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्र का दौरा करके ग्राम पंचायत स्तर पर यह कार्य कर रहे हैं.

5. महिलाओं की उद्यमिता संबंधित वित्तीय आवश्यकताओं के प्रभावशाली प्रबंधन के लिए वित्तीय समावेशन आवश्यक होता है और वित्तीय समावेशन तब ही प्रभावशाली साबित हो सकता है जब प्रत्येक महिला का

बैंक में खाता खुलवाया जाए. इसलिए बैंक अधिकारी, समग्र रूप से यह प्रयास कर रहे हैं कि उनके क्षेत्र की प्रत्येक महिला का बैंक में खाता अवश्य हो और उन्हें आवश्यक आर्थिक सहायता प्राप्त हो.

6. बैंक अधिकारी समय-समय पर खाताधारकों की समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रयास कर रहे हैं. बैंकिंग लोकपाल व्यवस्था का विकास इसलिए किया गया है कि बैंकिंग संस्थानों में समस्याओं का समाधान समय आधारित तरीके से किया जा सके. इस व्यवस्था के तहत बैंक अपने ग्राहकों को प्रेरित कर रहे हैं कि यदि उन्हें कोई समस्या है तो वे अवश्य अवगत करवाएँ, जिससे कि उनका समाधान त्वरित आधार पर किया जाए. इस व्यवस्था का लाभ बड़ी मात्रा में महिलाओं को भी मिल रहा है.

7. वर्तमान समय में भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में महिला उद्यमिता के क्षेत्र में एक नया आयाम यह जोड़ा गया है कि अब महिला बैंक स्थापित किए जा रहे हैं. ऐसे बैंक जो महिलाओं द्वारा, महिलाओं के लिए संचालित हैं. इनके माध्यम से एक विशेष प्रकोष्ठ बनाई जा रही है, जिससे कि महिला उद्यमियों को त्वरित आधार पर विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा सकें.

8. महिला उद्यमी जब अपना कारोबार प्रारंभ करती हैं तो उत्पादन कार्य हेतु उसे विभिन्न प्रकार की मशीनों, उपकरणों आदि की आवश्यकता होती है. अत: महिला उद्यमियों के लिए यह क्रय करना अनिवार्य होने से उन्हें बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है जो उन्हें बैंकों के द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही हैं.

9. यदि महिला उद्यमी ऐसे उत्पाद का कारोबार कर रही हैं, जिसकी माँग विदेशों में है तो वह महिला विदेशी कारोबार के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त बनाई जा सकती है और वस्तुओं का विदेशी कारोबार बैंकों के माध्यम से ही संभव है. भारत में केंद्रीय बैंक, आयात-निर्यात बैंक तथा विभिन्न प्रकार के वाणिज्यिक बैंक इस दिशा में प्रभावशाली योगदान दे रहे हैं, क्योंकि घरेलू कारोबार के साथ-साथ विदेशी कारोबार में भी बिलों का भुगतान बैंकों के माध्यम से ही संभव है.

महिला उद्यमिता के विकास में सबसे अधिक प्रभावशाली भूमिका बैंक ही निभा रहे हैं और यह भूमिका समय के साथ-साथ और अधिक प्रभावशाली होती जा रही है.

कल्याणी सिंह
क्षे. का., इंदौर

नराकास बैठक

दिनांक 20.11.2023 को नराकास, रीवा की छमाही बैठक का आयोजन क्षेत्र प्रमुख, श्री अजय खरे की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 30.11.2023 को नराकास, सीधी की छमाही बैठक का आयोजन एल. डी. एम., श्री जगमोहन की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 12.12.2023 को नराकास, बेलगावी की बैठक सुश्री आरती रौनियार क्षेत्र प्रमुख, बेलगावी की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

दिनांक 20.12.2023 को श्री एस वेंकट तिलक, क्षेत्र प्रमुख, श्रीकाकुलम की अध्यक्षता में नराकास, श्रीकाकुलम की छमाही बैठक का आयोजन किया गया.

होयसला व

बेलूर- ह

बेलूर यागाची नदी के तट पर स्थित एक छोटा-सा शहर है. इसका ऐतिहासिक नाम वेलापुरी है. यहाँ होयसला शैली में बना भगवान चेन्नकेशवा (भगवान विष्णु) का एक भव्य मंदिर है. इस मंदिर का परकोटा अत्यंत विशाल है. चारों तरफ अनेक नक्काशीदार मूर्तियाँ सजी हैं. लोग कहते हैं कि इस मंदिर को बनाने में 100 साल लग गए थे. यहाँ टहलते हुए लग रहा था मानो मैं एक जादुई दुनिया में आ गया हूँ.

होयसल राजाओं ने अपने शासनकाल में हलेबीडु को कुछ दिनों के लिए अपनी राजधानी बनाया था. यहाँ मानव निर्मित झील के तट पर एक भव्य मंदिर बना है, जिसमें होयसलेश्वर नाम से भगवान शिव की पूजा की जाती है. इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर आप भगवान गणेश की एक विशालकाय प्रतिमा के दर्शन करते हैं. इस मंदिर के निर्माण में, कहा

की विरासत

हलेबीडु

जाता है, 40 साल लगे थे. यहाँ वराह, त्रिमूर्ति, नृसिंह, शिव इत्यादि देवताओं की मूर्तियां अलग-अलग मुद्राओं तथा विभिन्न वस्त्राभूषणों में सजी दिखाई देती हैं.

हमारी इस यात्रा में विश्व प्रसिद्ध मंदिरों को देखना, पहाड़ियों के शिखर पर चढ़ना-उतरना, सूर्योदय तथा सूर्यास्त का आनंद लेना और इन दृश्यों को अपने कैमरे में सहेजना एक ऐसा विस्मयकारी अनुभव रहा, जिसे मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा. होयसला साम्राज्य की यह विरासत इतिहास और भूगोल की किताबों के वर्णन से कहीं अधिक रोमांचक लगी.

बी. भानू मूर्ति
क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

अब नारी की बारी

निकल पड़ी है नारी शक्ति,
उद्यम के क्षेत्र में बहार है.
आगे बढ़कर नेतृत्व करती,
अब नहीं कोई लाचार है.
शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग में शामिल,
नारियों की भरमार है.
महिला बढ़े तो देश बढ़े,
ऐसा मेरा विचार है.
हृदय की इच्छा, मन की चाहत,
कोई चुनौती, कभी न हारी
अब नारी की बारी.

आर्थिक जगत हो या एम.एस.एम.ई,
हर क्षेत्र में साथ है.
विश्व मंच पर आगे बढ़े,
यह अवसर भी खास है.
ग्रामीण क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों
की बरसात है.
आर्थिक आजादी से आगे बढ़े,
मजबूत हुआ जमात है.
नेतृत्व क्षमता, निर्णय अव्वल,
नहीं है अब कोई लाचारी.
अब नारी की बारी.

मेहनत करेंगे, काम करेंगे अब नेतृत्व
भी संभालेंगे.
ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र,
हर भूमिका निभाएंगे.
अपने जीवन को उन्नत कर,
भारत को आगे बढ़ाएंगे.
हम नारी हैं भारतवर्ष के सर्वोच्च
शिखर पर जाएंगी.
अटूट साहस, निरंतर प्रयास,
आगे बढ़ने की है तैयारी.
अब नारी की बारी.

शशिभूषण कुमार
क्षे.का., पटना

नारी स्वरूप

हे नारी !
तेरी अपनी पहचान है
क्यों बन रही उससे अंजान है,

तू खुद को क्यों खो रही
व्यर्थ के आडम्बर क्यों ढो रही,

क्यों कर रही किसी से तुलना
क्यों दूसरों के वजूद में घुलना,

तेरी अपनी काया है तेरी अपनी माया
फिर क्यों ओढ़ रही दूसरों का साया है,

गुमराह करने वालों से मत रख मेल तू
अपने वजूद से मत खेल तू,

मत उठा कदम खुद को मिटाने का
दूसरों के पदचिह्नों को अपनाने का,
शर्माना, रिझाना, गम में भी मुस्कुराना
तेरा ही हुनर है इस तरह इतराना,

कोमलता, शालीनता या बोलो ममता
तूझमें ही है यह सब क्षमता,

तू ही शक्ति का रूप है
तेरे और भी कई रूप है,

करबद्ध नमन है तेरे सरस्वती स्वरूप का

हे नारी !
तेरी अपनी पहचान है,
क्यों बन रही उससे अंजान है.

श्रीकांत भट्टड
क्षे.का., रायपुर

ओ नारी

ओ नारी तू तितली सी है, पंख फैला अब उड़ जा तू
तू तोड़ दे सब जंजीरों को, कीमत अपनी पहचान तो तू ।
आँखों में अपनी देख गौर से, शक्ति को अपने जान तो तू
और चल पड़ अपनी राह खोजने, इस जग को पीछे कर जा तू
हां मान लिया इस जग में अब तक, सबने तुझको बस रोका है
उड़ान को चाहा काबू करना, हर कदम पर तुझको टोका है ।
पर डर मत इनसे लड़ जा तू, जो करना है वो कर जा तू,
अब तोड़ दे इन पाखंडो को
शक्ति अपनी पहचान तो तू, शक्ति अपनी जान तो तू ।
ओ नारी तू खुशबू सी, आजाद गुलों सी हो जा तू
और लिख दे अपनी नई कहानी, तारों से आगे बढ़ जा तू ।
हाँ मान लिया चलना दूभर है, हर कदम पर गहरा साया है,
पर जननी है वो एकमात्र, जिसे समय भी रोक न पाया है ।
तू आम नहीं आसान नहीं, तेरे बगैर इंसान नहीं
शक्ति का तू एक स्त्रोत है नारी
अपनी शक्ति को जान तो तू, और तोड़ दे इन जंजीरों को,
कीमत अपनी पहचान तो तू, कीमत अपनी जान तो तू ।

तू डर मत बस तू पंख फैला, घबराहट पर आवाज़ लगा
हम दौड़े दौड़े आएंगे, हर संभव मदद कराएंगे।
नारी शक्ति की लौ जले, नारी उड़ान भरती रहें,
ये सपना पूरा करके ही, सच्ची तृप्ति हम पाएंगे।
चुन ले चाहे अब राह कोई तू, उद्यम, गणित या विज्ञान भले
सपने पूरे हाल में होंगे, करता है यूनियन वादा ये ।
जो चाहेगी वो पाएगी, अव्वल ही हमेशा आएगी ।
इस बात को अब स्वीकार तो तू, इसे मान तो तू, पहचान तो तू
हम साथ तेरे अब उठ चल तू, है तितली अब उड़ चल तू
और चल पड़ उस दुनिया की ओर अब
जिस जहां में हो बस तू ही तू, जिस जहां में हो बस तू ही तू
ओ नारी तू तितली सी है, पंख फैला अब उड़ जा तू ।

प्रत्युष राज
क्षे. का., हैदराबाद पंजागुट्टा

सफर सपनों का

एक सपना देखा था उन नन्ही आखों ने
जब खुलीं थीं वो, दुनिया में पहली बार

एक सपना किया था महसूस, उन नन्हे होठों ने
जब चूमा था माँ का आँचल, दुनिया में पहली बार

एक सपना बुना था उन नन्ही उँगलियों ने
जब थामी थी पिता की ऊँगली, दुनिया में पहली बार

किया था सपनों का सफर शुरू उन नन्हे क़दमों ने
डगमगाते भागे थे, जब चाँद की ओर पहली बार

शुरू हुई दास्तान, वक़्त गुजरने लगा
उन आँखों को वो सपना, सच्चा लगने लगा

डगमगाते कदम, दौड़ने लगे
लिए आखों में, किसी का सच्चा प्यार

खायी चोट जब उन नन्हे कदमो ने
आएं आखों में आसूं तब पहली बार
जख्मों को देखकर हुआ और पक्का इरादा
पानी है मंज़िल अपनी किया खुद से वादा

वक़्त गुजरता रहा, वो गिर के उठता रहा
नादाँ ने न जाना, मंजिल का था न कोई ठिकाना
धीरे धीरे ज़ख़्म नासूर हो गए
भागते कदम, थक के चूर हो गए

उस दिन जो वो गिरा, गिर के न उठा
दम तोड़ती सासों ने पूछा, उन आखों से पहली बार
क्यों देखा तुमने सपना, क्यों किया तुमने प्यार

उन खुली हुई आखों को, आज भी है इंतज़ार
कोई उन्हें बताए, क्यों देखा सपना पहली बार

रजनीश खरे
मुख्य डिजिटल अधिकारी
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

सुनहरा सपना

बुलाते हैं पास मुझे
ये कितने हसीन नजारे
क्या कहता है यह आसमान
लेकर धरती के सहारे
मदहोश हुए ये पेड़
गाते-गाते नाचते झूमते
मुश्किल है अब क्या बताएं
कौन हारे कौन जीते
क्यों यह चंचल हवा
करती है कानाफूसी
मंडराते हुए तमाशाई बादल भी
रोक न सके अपनी हंसी
देखकर इन पेड़ों की नाच
झरनों का कलकल करना भी बढ़ गया
कुदरत का यह हुस्न देखकर
मैंने होश अपना खो दिया
इसी नशे में मैं तो
लड़खड़ाता आगे बढ़ गया,
सुनकर मुर्गे की बांग पहली
मेरा सुनहरा सपना टूट गया

लीना नाडकर्णी
क्षे. का., अंधेरी

रुकना मत थकना मत

तू लगा रहे तू थकना मत
तू चलता जा तू रुकना मत
मुश्किल कितनी भी आ जाए
तू डटा रहे तू डरना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

मौसम भी कितने आएगें
मिल-मिल के तुझे डराएंगे
तूफान भी चाहे आ जाए
तू खड़ा रहे तू गिरना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

गर चट्टान तेरा इरादा है
फिर तुझसे यह वादा है
दुनिया होगी मुट्ठी में तेरी
बस तू पीछे हटना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

अभी तो तूने शुरुआत की है
सफलता की बस बात की है
हर कोई तुझको खींचेगा
चिल्लाएगा तुझपे चीखेगा
वो कहेगा आगे जाना मत
पर तू रुकना मत तू थकना मत

एक ऐसा मोड़ भी आएगा
जब तन्हा तू हो जाएगा
अन्धेरा होगा सामने तेरे
बस उस पल तू घबराना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

जब चीरदे तू पहाड़ों को
शेरों के उन सब बाड़ों को
कदम तू रखना धरती पर ही
हवाओं में तू उड़ना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

फिर एक दिन ऐसा आएगा
सफल जब तू हो जाएगा
जो हंसते थे कोशिशों पर तेरी
लाचारी पर उनकी हंसना मत
तू रुकना मत तू थकना मत

शाहनवाज़
क्षे. का., बरेली

कौशल विकास में ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान ग्रामीण विकास और स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान का प्रतिरूपित मॉडल एक अनूठी पहल है जो न केवल प्रशिक्षण प्रदान करती है बल्कि दो वर्षों तक निरंतर सहायता भी प्रदान करती है. ग्रामीण विकास और स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना वर्ष 1982 में कर्नाटक के धर्मस्थल में डॉ. डी वीरेंद्र हेगड़े ने सिंडिकेट बैंक और केनरा बैंक के साथ संयुक्त रूप से की थी. इसका उद्देश्य था "भारत में ग्रामीण युवाओं को रोजगार देना" क्योंकि इनके पास न तो पर्याप्त शिक्षा थी न पर्याप्त कौशल. देश में गरीबी की समस्या को कम करने के लिए यह आवश्यक था कि युवाओं को रोजगार दिया जाए और यह सशक्त प्रशिक्षण, स्वरोजगार, उद्यमिता विकास आदि के माध्यम से ही संभव था. अपने इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूरे देश में ग्रामीण विकास और स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान ने अपने पंख फैलाए हैं तथा वर्तमान समय में पूरे देश में 27 ग्रामीण विकास और स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहे हैं.

भारत सरकार के ग्रामीण विकास और स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान की इसी पहल से प्रभावित होकर ग्रामीण विकास मंत्रालय ने 2009 में, बैंकों को सभी प्रमुख जिलों में इसी प्रकार का संस्थान स्थापित करने की सलाह दी, जिसे ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के रूप में जाना जाता है. ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान न केवल प्रशिक्षण प्रदान करती है बल्कि दो साल तक निरंतर सहायता भी प्रदान करती है. यह नि:शुल्क संस्थान है जो 18-45 वर्ष के आयु व्यक्तियों को जाति, धर्म, लिंग के भेदभाव से परे होकर प्रशिक्षण प्रदान करती है. साथ ही समाज के उन तबकों को प्रशिक्षण प्रदान करती है जिनके पास संसाधनों एवं ज्ञान का अभाव है. इस हेतु किसी औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है बल्कि प्रशिक्षण में बुनियादी ज्ञान को प्राथमिकता दी जाती है. वर्तमान में, देश में 582 ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान हैं जिन्होंने 31.90 लाख से अधिक बेरोजगार उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया है. राज्य सरकारें ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान परिसर के निर्माण के लिए मुफ्त में भूमि आवंटित कर रही हैं तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान भवन के निर्माण के लिए एक करोड़ रुपए की अनुदान सहायता दे रही है और गरीबी रेखा से नीचे की श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए किए गए प्रशिक्षण व्यय की प्रतिपूर्ति ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा बैंकों को की जाती है.

स्थानीय प्रशिक्षण आवश्यकताओं के अनुरूप 61 से अधिक प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध हैं. ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें महिलाओं हेतु ब्यूटिशियन, कढ़ाई - बुनाई, थ्रेड वर्क, डेस्कटॉप पब्लिशिंग, कम्प्यूटर हार्डवेयर आदि शामिल हैं. ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षु न केवल प्रशिक्षण के रूप में रोजगार का एक साधन प्राप्त करते हैं बल्कि उद्यमिता की ओर भी प्रेरित होते हैं. यह युवाओं को विचारों का आदान-प्रदान करने और दूसरों की सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखने और विपणन के संपर्क के लिए मंच प्रदान करता है, जिससे आगे चलकर वे सफल उद्यमी बन सकते हैं. ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को सफल उद्यमियों के रूप में विकसित करने और बदलने पर ज़ोर देती है. ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित उम्मीदवार बेहतर गुणवत्ता वाले उधारकर्ता बनते हैं, जो आगे चलकर रोज़गार हेतु बैंकों से ऋण लेते हैं. इन संस्थाओं में आत्मविश्वास का निर्माण, उद्यमिता कौशल और नेतृत्व गुणों का विकास होता है और प्रशिक्षु आगे चलकर स्वयं प्रशिक्षक भी बन सकते हैं. इसके अतिरिक्त इन संस्थानों द्वारा समय- समय पर रक्तदान अभियान, स्वच्छ भारत अभियान जैसे सामाजिक कार्य भी किए जाते हैं. अपने इन कार्यों के लिए समय - समय पर विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जाता है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रायोजित यूनियन ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान, ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ऐसे स्वरोजगार व्यवसाय/उद्यम अपनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं, जो सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, स्थानीय मांगों पर खरा उतरने वाले, कम इनपुट लागत एवं उच्च रिटर्न वाले और स्व-स्थायी हैं.

भारत के 8 राज्यों में, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रायोजित और स्थापित कुल 30 ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान हैं जिसमें आंध्र प्रदेश में 9, बिहार में 2, कर्नाटक में 2, केरल में 3, मध्य प्रदेश में 3, ओडिशा में 2, तेलंगाना में 2 और उत्तर प्रदेश में 7 संस्थान हैं.

यूनियन ग्रामीण स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को ब्यूटीशियन प्रशिक्षण, मोबाइल फोन मरम्मत, सिलाई, बिजली-उपकरणों की मरम्मत, पशुपालन, कंप्यूटर प्रशिक्षण विभिन्न कृषि संबंधी कार्यक्रम, पी.एम.ई.जी.पी. जैसे पाठ्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं. ये संस्थान अपने स्व-उद्यमी प्रशिक्षित उम्मीदवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है एवं सफलतापूर्वक प्रशिक्षित उम्मीदवारों को उनकी आजीवका स्थापित होने तक संपर्क में रहती है. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया सफलतापूर्वक प्रशिक्षित उम्मीदवारों को स्व-रोजगार उद्यम या व्यवसाय स्थापित करने के लिए आवश्यकता-आधारित क्रेडिट लिंकेज प्रदान करता है.

दीपा साव
क्षे. का., मछलीपट्टणम

सफलता की कहानियाँ

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पूरे देश के अग्रणी जिलों में संचालित यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान से जुड़कर आज ग्रामीण महिलाओं ने स्वावलंबन की मिसाल पेश की है. यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान देश के विभिन्न जिलों में जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं, जिनमें ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में स्वावलंबन एवं उद्यमी बनने की प्रेरणा जगाई जाती है. महिलाएं इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जुड़कर नित्य नई सफलता की कहानी लिख रही हैं और इन महिलाओं के सपनों को पंख देने हेतु ये संस्थान हमेशा तत्पर रहते हैं, जिससे महिलाओं में सशक्त एवं अपने पैरों पर खड़े होने की ललक बढ़ रही है. ऐसी ही कुछ महिलाओं की सफलता की कहानी प्रस्तुत है जो यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा संचालित यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, आजमगढ़ से प्रशिक्षण एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से ऋण प्राप्त कर स्वरोजगार स्थापित कर सुखमय जीवन व्यतीत कर रही हैं और साथ ही समाज में अपना और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग की अनुशंसा भी कर रही हैं.

नाम : श्रीमती रीना
बैच : 258 बैंक मित्र

श्रीमती रीना बहुत ही साधारण कृषक परिवार से हैं. उनके पति एक सामान्य किसान हैं. उनके परिवार की आय का मुख्य स्रोत कृषि है. आर्थिक समस्या के चलते कोई कारोबार या धनोपार्जन हेतु अन्य कार्य करने की इच्छा रखते हुए भी वह आगे बढ़ने में असमर्थ थी. उन्होंने 12 वीं तक की पढ़ाई पूरी की है और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में समूह सखी के पद पर कार्यरत हैं. उन्होंने अपनी जीवन शैली में सुधार के लिए एक कारोबार शुरू करने का फैसला किया. यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, आजमगढ़ द्वारा लगाए गए जागरूकता शिविर से चलाए जा रहे बैंक मित्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे जानकारी प्राप्त किया. इससे प्रेरित होकर इन्होंने सरकार द्वारा चलायी जा रही वन.जी.पी.वन.बी.सी. योजना के अंतर्गत आवेदन किया. प्रशिक्षण प्राप्त कर आई. आई.बी.एफ. की परीक्षा उत्तीर्ण की. सरकार की तरफ से इस योजना के अन्तर्गत 75000/- रुपए का अनुदान प्राप्त कर अपनी ग्राम सभा में ही एक बी.सी. पॉइंट स्थापित किया और एक छोटी आमदनी के साथ शुरूआत की. कुछ समय बाद उनकी स्थिति पहले से बेहतर हो गई और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा. अब वह आसानी से पच्चीस से तीस हजार रुपए प्रतिमाह कमा रही हैं.

नाम : श्रीमती प्रेमशीला
बैच : 291 महिला टेलर उद्यमी

श्रीमती प्रेमशीला पत्नी श्री केशव लाल चौरासिया बहुत ही साधारण कृषक परिवार से हैं. उनके पति एक प्राइवेट कम्पनी में काम करते हैं उनके परिवार की आय का मुख्य स्रोत कृषि है. इन्होंने 12 वीं तक की शिक्षा प्राप्त की है. आर्थिक समस्या के चलते कोई कारोबार या धनोपार्जन हेतु अन्य कार्य करने की इच्छा रखते हुए भी वह आगे बढ़ने में असमर्थ थीं. कुछ समय पश्चात उन्हें यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, आजमगढ़ द्वारा लगाए गए जागरूकता शिविर से संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे पता चला और उन्होंने सिलाई कार्य सीखने की इच्छा व्यक्त करते हुए संस्थान में अपना नामांकन कराया और 'महिला टेलर उद्यमी' विषय पर प्रशिक्षण लिया तथा यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया कोटिला शाखा से मुद्रा योजना के अंतर्गत रुपए एक लाख का ऋण प्राप्त किया. वह सिलाई के साथ - साथ कपड़ों की खरीद-बिक्री करने लगी. इसके बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होने के पश्चात कारोबार को और गति प्रदान करने के लिए टेलरिंग सेंटर भी खोल लिया और लड़कियों को प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य करना भी शुरू कर लिया. उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा. इस समय वह आसानी से बीस से पच्चीस हजार रुपए प्रतिमाह कमा रही हैं.

रामानन्द मिश्र
अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा

भारत की प्रेरणाप्रद महिलाएं

महिला पर्याय है मजबूती की, महिला पर्याय है धैर्य की, महिला पर्याय हैं मेहनत की और अगर सारगर्भित तरीके से देखा जाए तो महिला ही सृष्टि रचियता है, जिसके पोषण में जीवन आकार लेता है. जब महिला कुछ कर लेने की ठान लेती है तो वह उसे कर दिखाती है. अगर पूरी मेहनत और विश्वास के साथ काम किया जाए तो मंजिल को पाना मुश्किल नहीं है, मंजिल के रास्ते में कई बार बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है पर इनसे सीख लेकर आगे बढ़ना ही मेहनती व्यक्ति की निशानी है. कई भारतीय महिलाओं ने अपने कठिन परिश्रम से सफलता का परचम लहराया है अपने क्षेत्र की सर्वप्रथम महिला ही नहीं बल्कि व सर्वोत्तम होने का खिताब भी पाया है.

पहली महिला प्रधानमंत्री - इन्दिरा गांधी

इन्दिरा गांधी आजाद भारत की पहली महिला है, जिन्होंने केंद्र में अपनी सरकार बनाई और पूरे भारत का नेतृत्व किया. आजादी के 76 वर्ष में इन्दिरा गांधी के बाद से अब तक देश को कोई महिला प्रधानमंत्री नहीं मिली. बतौर प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने अपने कार्यकाल में बहुत दमदार फैसले लिए और पूरे देश में क्रांति ला दी थी. बैंकों का लाभ हर वर्ग तक पहुँचाने के लिए इन्दिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया. उनका यह फैसला देश के विकास में महत्वपूर्ण रहा. उनके द्वारा लिए गए राजनीतिक फैसलों ने देश में बड़े बदलाव किए थे. यह उनकी राजनीतिक क्षमता का ही प्रभाव था कि एक समय देश में "इन्दिरा इज इंडिया, इंडिया इज इन्दिरा" का नारा गूंजने लगा था.

आप सिर्फ देश की पहली प्रधानमंत्री ही नहीं थी, बल्कि प्रधानमंत्री के पद पर लगातार तीन बार आसीन हुई थीं. वर्ष 1966 से 1977, 1980 से 1984 तक प्रधानमंत्री रहीं और उसी दौरान उनकी हत्या की गयी. दुनियाभर के लोग उन्हें 'आयरन लेडी' के नाम से जानते हैं. 1972 में उन्हें 'भारत रत्न' व बांग्लादेश का 'मैक्सिकन अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ. 1971 में किए गए अमेरिका के विशेष 'गैलप जनमत सर्वेक्षण' के अनुसार वह दुनिया की सबसे लोकप्रिय महिला थीं. उनकी मृत्यु के बाद शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए वर्ष 1986 में 'इन्दिरा गांधी पुरस्कार' की स्थापना की गयी थी.

भारतीय राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री - सुचेता कृपलानी

सुचेता कृपलानी का जन्म जून 1908 में अंबाला (पंजाब) में हुआ था. उन्होनें अपनी शिक्षा इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से पुरी की. आपने 1939 तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में संवैधानिक इतिहास के शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया. 1936 में, उन्होंने कांग्रेस पार्टी के सदस्य और प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी आचार्य कृपलानी से विवाह किया. आप 1938 में कांग्रेस पार्टी की सदस्य बनीं और डेढ़ वर्ष तक विदेश विभाग और महिला अनुभाग की सचिव के रूप में कार्य किया.

आप स्वतंत्र भारत की पहली महिला सांसदों में से एक थीं और प्रांतीय संसद (1950-52) पहली लोकसभा (1952-56) और दूसरी लोकसभा (1957-62) की सदस्य थीं. उनका उत्तर प्रदेश में एक सफल राजनीतिक करियर रहा और उन्होंने उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य (1943-50) और श्रम, सामुदायिक विकास और उद्योग मंत्री (1960-1963) सहित अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं. आप कांग्रेस पार्टी के टिकट पर राज्य की मुख्यमंत्री चुनी गयीं, जिससे उन्हें एक भारतीय राज्य की पहली मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ और अक्तूबर 1963 से मार्च 1967 तक आप इस पद पर रहीं.

पहली महिला आई.पी.एस. अधिकारी – किरण बेदी

किरण बेदी एक ऐसी महिला है, जिन्होंने हमेशा पद से ऊपर अपने कर्तव्य को रखा. दरअसल, जब वह नई दिल्ली की ट्रैफिक कमिश्नर बनीं थीं, तो उन्होंने पार्किंग नियमों का उल्लंघन करने के कारण भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की गाड़ी को क्रेन से उठवा दिया था. उनका मानना है कि कानून सभी नागरिकों के लिए एक समान होना चाहिए. इस घटना के बाद से ही लोग किरण बेदी को 'क्रेन बेदी' कहकर पुकारने लगे थे.

किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा में शामिल होने वाली प्रथम महिला अधिकारी हैं. पुलिस सेवा में शामिल होने से पहले वह एक टेनिस प्लेयर भी रह चुकीं थीं. उनकी पहली पोस्टिंग 1975 में दिल्ली के चाणक्यपुरी सबडिविजन में हुई. उसी वर्ष 1975 में गणतंत्र दिवस परेड में दिल्ली पुलिस के सभी पुरुष दल का नेतृत्व करने वाली वह पहली महिला बनीं. भारतीय पुलिस सेवा में शामिल होने के बाद किरण बेदी ने कई पदों पर काम किया. आपने पुदुचेरी के उप राज्यपाल का पद भी संभाला है.

माउंट एवरेस्ट फतह करने वाली प्रथम महिला -बछेंद्री पाल

भारत की बछेंद्री पाल संसार की सबसे ऊंची चोटी 'माउंट एवरेस्ट' पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला और दुनिया की 5वीं महिला पर्वतारोही है.

आपको पर्वतारोहण का पहला मौका 12 वर्ष की उम्र में आया, जब उन्होंने अपने स्कूल और सहपाठियों के साथ 400 मीटर की चढ़ाई की. बछेंद्री पाल ने वर्ष 1984 के एवरेस्ट पर्वतारोहण अभियान में पुरुष पर्वतारोहियों के साथ शामिल होकर, सफलता पूर्वक संसार की सबसे ऊंची चोटी 'माउंट एवरेस्ट' पर पहुंचकर भारत का राष्ट्रीय ध्वज लहराया और एवरेस्ट पर विजय पाई. वर्तमान में आप टाटा स्टील में कार्यरत हैं.

पहली महिला शिक्षक - सावित्री बाई फुले

देश की पहली महिला शिक्षक सावित्री बाई फुले ने पहले खुद लंबी लड़ाई लड़कर पढ़ाई की और उसके बाद अन्य लड़कियों को पढ़ने में मदद की. सावित्री बाई फुले के बिना देश की शिक्षा और सामाजिक उत्थान की बात अधूरी है. सावित्री बाई फुले का जन्म 03 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित नायगांव नामक छोटे से गांव में हुआ था. 9 वर्ष की उम्र में 13 वर्षीय ज्योतिबाराव फुले के साथ उनका विवाह हो गया. सावित्री बाई फुले पूरी तरह अनपढ़ थीं, तो वहीं उनके पति मात्र तीसरी कक्षा तक पढ़े थे. सावित्री बाई फुले ने अपने पति दलित चिंतक समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबाराव फुले से पढ़कर सामाजिक चेतना फैलाई थी. उन्होंने 19वीं सदी में स्त्रियों के अधिकारों, अशिक्षा, छुआछूत, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई थी. अंधविश्वास और रूढ़ियों की बेड़ियां तोड़ने के लिए लंबा संघर्ष किया.

नोबल पुरस्कार पाने वाली पहली महिला - मदर टेरेसा

मदर टेरेसा जन्म से भारतीय न होने पर भी भारत उनकी कर्मभूमि रही है. संपूर्ण विश्व को शांति और मानवता का संदेश देने वाली एक महान हस्ती मदर टेरेसा को विश्वभर में फैले उनके मिशनरी के कार्यों की वजह से व गरीबों और असहायों की सहायता करने के लिए 17 अक्तूबर, 1979 को 'नोबेल शांति पुरस्कार' प्रदान किया गया था. उन्हें सन 1962 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' और वर्ष 1980 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से अलंकृत किया गया. पोप जॉन पाल - II ने 19 अक्तूबर, 2003 को रोम में मदर टेरेसा को 'धन्य' घोषित किया था. मदर टेरेसा का निधन 5 सितंबर, 1997 को हुआ.

अशोक चक्र प्राप्त करने वाली पहली महिला - नीरजा भनोट

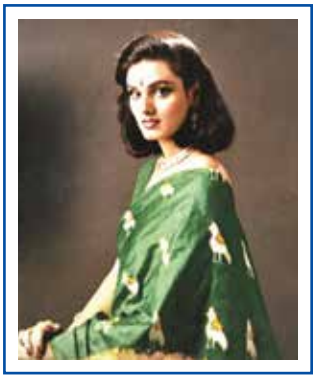

1986 को भारत का प्लेन हाईजैक हुआ तो नीरजा ने आतंकियों का सामना डटकर किया और खुद की जान दांव पर लगाकर 360 लोगों की जान बचाई. नीरजा मुंबई से अमेरिका जाने वाली फ्लाइट में बतौर सीनियर एटेंडेंट शामिल थीं. इस दौरान कराची से उड़ान भरने से पहले चार आतंकियों ने पूरे विमान को हाईजैक कर लिया और यात्रियों को गन प्वाइंट पर ले लिया. लेकिन उस रात नीरजा ने अपनी सूझबूझ से विमान का दरवाजा खोल दिया और सभी यात्रियों की जान बचाई. इस दौरान 5 सितंबर 1986 को आंतकियों की फायरिंग में नीरजा शहीद हो गईं. इसी बहादुरी के लिए उन्हें मरणोपांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था.

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला - आशापूर्णा देवी

प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला आशापूर्णा देवी का जन्म 8 जनवरी, 1909 को कोलकाता में हुआ था. वह बंगाली उपन्यासकार और कवयित्री थीं. सर्वाधिक प्रसिद्ध बंगाली लेखकों में से एक आशापूर्णा की शादी कम उम्र में ही कर दी गई थी. वह अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी नहीं कर पायीं थीं. लेकिन, घर पर रहकर ही उन्होंने बहुत-सी बंगाली पत्रिकाएं व किताबें पढ़ डाली. आशापूर्णा को उनके मजबूत महिला किरदारों के लिए जाना जाता है. उन्हें वर्ष 1976 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था. आप ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित पहली महिला लेखिका थीं. साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित उनकी प्रसिद्ध पुस्तक प्रतिश्रुति, स्वर्णलता व बकुल कथा की श्रृंखला में तीन अलग-अलग पीढ़ियों की महिलाओं की जीवनी का वर्णन किया गया है. इनमें समकालीन बंगाली समाज की महिलाओं की परस्पर विरोधी उम्मीदों को दमदार किरदारों के जरिए कागज पर उकेरा गया है.

भारत की पहली महिला राफेल पायलट - फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिवांगी सिंह

वर्ष 2022 को गणतंत्र दिवस में देश की पहली महिला राफेल जेट पायलट फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिवांगी सिंह नें भारतीय वायु सेना की झांकी में हिस्सा लिया था. शिवांगी सिंह पंजाब के अंबाला में स्थित आईएएफ़ के गोल्डन एरो स्क्वाड्रन का हिस्सा है. शिवांगी सिंह 2017 में भारतीय वायु सेना में शामिल हुई और उन्हें भारतीय वायुसेना के महिला लड़ाकू पायलटों के दूसरे बेंच में शामिल किया गया था.

भारत की पहली महिला उद्यमी - कल्पना सरोज

कल्पना सरोज सात अलग-अलग बिजनेस कंपनियों की मालकिन हैं. आप एक भारतीय उद्यमी और टेडएक्स वक्ता हैं. मुंबई, भारत में कमानी ट्यूब्स की अध्यक्ष भी हैं. इन्हें यह सफलता सिर्फ एक रात में नहीं मिली. इसके लिए कल्पना सरोज को दिन-रात मेहनत करनी पड़ी. कल्पना सरोज का जन्म महाराष्ट्र के एक दलित परिवार में हुआ था. सामाजिक भेद-भाव बालविवाह, ससुराल में प्रताड़ना का सामना करना पड़ा. कल्पना ने अपनी शादी तोड़ दी. उन्हें अपने मायके में भी समर्थन नहीं मिला. फिर भी आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने कुछ दिन बहुत ही कम मजदूरी पर नौकरी के बाद अपना कारोबार शुरू किया और अब कई कंपनियों की मालिक है. कल्पना सरोज को 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है. आपने कारोबार के साथ-साथ सामाजिक कार्यों को भी किया है. आपने महिलाओं को सशक्त बनाने, शिक्षा को बढ़ावा देने, जाति आधारित भेदभावों जैसी चुनौतियों से लड़ने के लिए मुख्य रूप से काम किया है.

उपासना सिरसैया
क्षे. का., हैदराबाद पंजागुट्टा

केंद्रीय कार्यालय के तत्वावधान में विभिन्न केंद्रों में आयोजित दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला

दिनांक- 11.12.2023 एवं 12.12.2023
स्थान- हैदराबाद

दिनांक- 23.11.2023 एवं 24.11.2023
स्थान- बेंगलूरु

दिनांक- 26.10.2023 एवं 27.10.2023
स्थान- मंगलूरु

दिनांक- 26.10.2023 एवं 27.10.2023
स्थान- दिल्ली

दिनांक- 26.10.2023 एवं 27.10.2023
स्थान- भोपाल

दिनांक- 26.10.2023 एवं 27.10.2023
स्थान- विशाखपट्टणम

दिनांक- 17.11.2023 एवं 18.11.2023
स्थान- मुंबई

दिनांक- 26.10.2023 एवं 27.10.2023
स्थान- लखनऊ

राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार

'पद्मश्री' विजयदान देथा

साहित्य शब्दों और अर्थों का कलात्मक साहचर्य है. मानव संवेदनाओं का पुंज है. साहित्यकार का कर्म है कि वह ऐसे साहित्य का सृजन करे, जो राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बंधुत्व और सद्भावना के साथ मनुष्य जीवन में अच्छे मूल्य प्रतिपादित करे. साहित्य का आधार ही जीवन है. सच्चे साहित्यकार की दृष्टि में साहित्य ही अपने समाज की अस्मिता की पहचान होता है. साहित्य की उपादेयता में ही साहित्य की प्रासंगिकता है. साहित्यकार में युगचेतना होती है और यही चेतना साहित्य सृजन का आधार बनती है. साहित्य सृजन के इस खंड में आज हम राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार 'पद्मश्री' विजयदान देथा के बारे में जानेंगे. विजयदान देथा ने राजस्थानी साहित्य को इस तरह से गढ़ा कि इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की.

राजस्थान की लोकसंस्कृति के प्रमुख रूप से तीन आधार स्तम्भ हैं - लोकनाट्य, लोकगीत और लोकनृत्य. वर्षों से चली आ रही इन विधाओं ने राजस्थानी लोक संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दी है. विजयदान देथा ने अपने साहित्य में इन रूपों को आत्मसात कर इनके वैविध्य को उद्घाटित किया है.

जीवन परिचय: राजस्थान के जोधपुर जिले के बोरुन्दा गाँव में 1 सितम्बर, 1926 को जन्मे विजयदान देथा जाने माने साहित्यकार, कथाकार और व्यंग्यकार हैं. विजयदान देथा को लोग प्यार से 'बिज्जी' कह कर संबोधित करते थे और उन्हें 'राजस्थान के शेक्सपीयर' के रूप में जानते हैं. बिज्जी ने राजस्थान के एक छोटे से कस्बे बोरुन्दा में रहकर एक ऐसे साहित्य की रचना की जिससे उनकी पहचान विश्व पटल पर बन गई. वियजदान देथा ने अपने आस-पास की लोक कथाओं, लोकगीतों को सुना, समझा और उन्हें आत्मसात कर उनमें आधुनिक रंग भर कर उन्हें प्रस्तुत किया.

बिज्जी का साहित्य उन लोक कथाओं का संग्रह है, जो राजस्थान की माटी की सोंधी खुशबू बिखेरता है. वे राजस्थानी भाषा के ऐसे बिरले कथाकार थें, जिन्हें युग निर्माता कहना गलत नहीं होगा. लोक संस्कृति का यह अपनापन ही सभी को आकर्षित करता है इससे देशी ही नहीं बल्कि विदेशी भी प्रभावित होने से नहीं बच पाए. साहित्य के जमीनी जुड़ाव

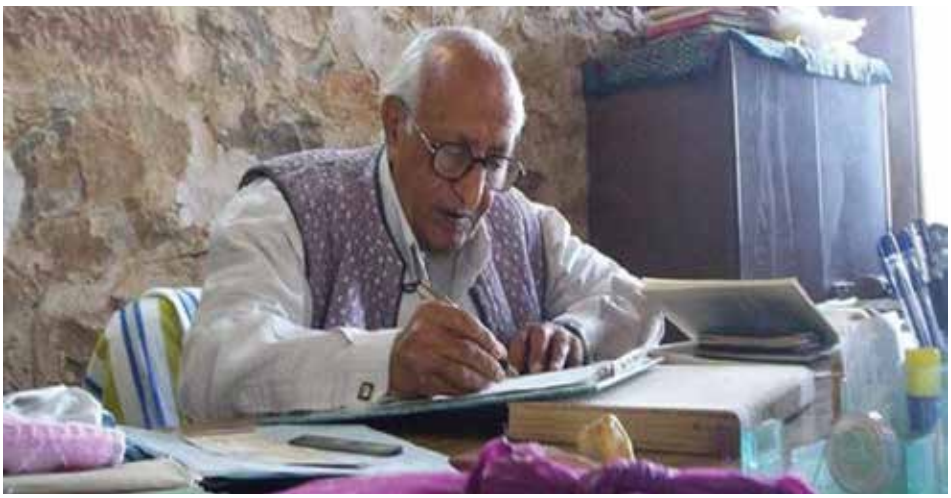

के कारण बिज्जी का कथा साहित्य बोरुन्दा से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरंतर फैलता रहा. बिज्जी का कथालोक समाज के उस तबके को एक संदेश प्रदान करता है, जो भौतिकता के चकाचौंध में अपनी जमीन को भूल चुके हैं.

कृतियाँ: भारतीय मेधा का उत्कृष्ट रूप अगर किसी को देखना हो तो उन्हें राजस्थानी भाषा के बहुचर्चित लेखक और साहित्यकार विजयदान देथा उर्फ बिज्जी की कहानियों से एक बार रूबरू होना ही पड़ेगा. उनकी कहानियों में एक तरफ लोक का जादुई आलोक है तो दूसरी तरफ सहज चिंतन और गहरे सामाजिक सरोकारों से ओतप्रोत एक सजग रचनाकार का कलात्मक एवं वैचारिक स्पर्श. राजस्थानी भाषा में 800 से अधिक कहानियां, लघुकथाएं लिखने वाले विजयदान देथा की कृतियों का हिन्दी, अंग्रेजी समेत विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया. 'बातां री फुलवारी' उनकी सुप्रसिद्ध रचना है. उनकी कृतियों में मुख्य रूप से शामिल हैं प्रेरणा (कोमल कोठारी द्वारा सह संपादित), सोरठा, टिडो राव, उलझन, अलेखु हिटलर, रूंख, कबू रानी, अनोखा पेड़, महामिलन, बापू के तीन हत्यारे, मेरा दर्द न जाने कोई, प्रिय मृणाल, सपनप्रिया आदि.

विजयदान देथा का साहित्य केवल मनोरंजन का कारक ही नहीं बल्कि एक नए प्रकार के

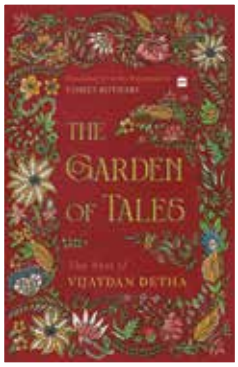

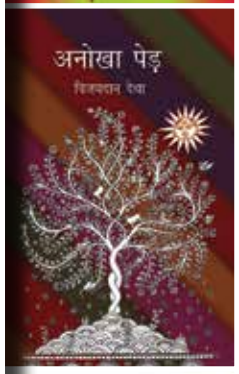

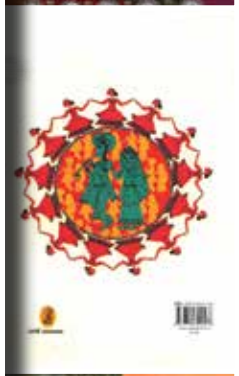

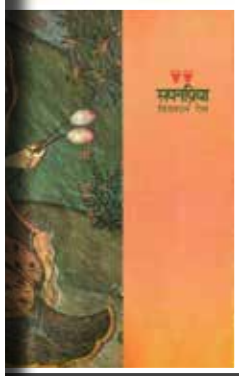

साहित्य एवं संस्कृति का निर्माण भी करता है.

उनकी रचनाओं पर आधारित साहित्य को प्रसारित करने में सिनेमा, नाटकों एवं रंगमंच की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. सिनेमा और नाटक दोनों दृश्यगत विधा और अपनी प्रभावशीलता में निरंतर विस्तार कर रहे हैं. यही कारण है कि अनेक नाटककारों और फिल्मकारों ने देथा के साहित्य को सिनेमा, नाटकों एवं रंगमंच के माध्यम से प्रसारित किया है और फिल्म रूपांतरण से इसके नए आयामों और अनछुए पहलुओं को उद्घाटित किया है. बिज्जी के कथा साहित्य ने बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान बनाकर दर्शकों को लोक संस्कृति से रूबरू करवाने में सफलता हासिल की है. 1973 में मणिकौल ने दुविधा, 1975 में श्याम बेनेगल ने चरणदास चोर, 1986 में प्रकाश झा ने परिणति, 2005 में अमोल पालेकर ने पहेली व 2014 में मरूघर आर्ट्स द्वारा लाजवन्ती (द ऑनर कीपर) का फिल्म रूपांतरण किया गया. नाट्य रूपान्तरण के अन्तर्गत हबीब तनवीर द्वारा चरणदास चोर, उदय शंकर द्वारा बिज्जी का खजाना (दूरदर्शन पर प्रसारित) प्रमुख हैं. इनके अतिरिक्त बिज्जी की अनेक लघु कथाओं का भी नाट्य एवं फिल्म रूपान्तरण किया गया है. साथ ही बिज्जी की कई कहानियों को सफलतापूर्वक मंचित भी किया गया है. इससे स्पष्ट है कि बिज्जी का कथा साहित्य अपना विशेष महत्व रखता है, जिसे फिल्म व नाट्य रूपान्तरण और रंगमंच के माध्यम से जीवन्त करने का प्रयास किया जा रहा है. ऐसी स्थिति में यह कहने में संकोच नहीं रहता कि हिंदी सिनेमा आधुनिकता की प्रतिच्छाया से जुड़कर तथा गतिशील और रंगमंच कला को पाकर समृद्ध होता जा रहा है. देथा का साहित्य सिनेमा को एक तरह से चुनौती देकर समृद्ध बनाता है.

पुरस्कार एवं सम्मान: विजयदान देथा को भारत सरकार द्वारा 2007 में पद्मश्री से अलंकृत किया गया. वर्ष 2011 में इन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए नामित किया गया. देथा को 1974 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ. राजस्थान सरकार द्वारा 2012 में प्रथम 'राजस्थान रत्न' से सम्मानित किया गया. इसके अतिरिक्त उन्हें मरुधरा पुरस्कार, साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार तथा भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार भी प्रदान किए गए. राजस्थानी भाषा में चौदह खंडों में प्रकाशित 'बाताँ री फुलवारी' के दसवें खंड को भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया, जो राजस्थानी कृति हेतु पहला पुरस्कार है. उनका साहित्य मानवीय जीवन के अनछुए पहलुओं को समझने का एक माध्यम है, लोक संस्कृति को जीवंत करने का प्रयास है, सामाजिक चेतना का विकास करने का तरीका है, आपसी समन्वय व भाईचारे को विकसित करने की कला है. राजस्थान की लोककथाओं को मौजूदा समाज, राजनीति और बदलाव के औजारों से लैस कर उन्होंने कथाओं की ऐसी फुलवारी रची है जिसकी सुगंध दूर-दूर तक महसूस की जा सकती है.

निधन: विजयदान देथा का 10 नवम्बर, 2013 को दिल का दौरा पड़ने से अपने पैतृक गाँव में निधन हुआ. आप सिर्फ इसलिए नहीं याद रखें जाएंगे कि आपकी रचनाओं को सिनेमा/बॉलीबुड में स्थान दिया गया बल्कि इसलिए कि उन्होंने एक लोक संस्कृति को संरक्षित किया और उसे पुनर्जीवित किया. बच्चे की तरह सरल और निश्चल विजयदान देथा ने मृत्यु के बारे में एक बार कहा था 'मृत्यु तो जीवन का श्रृंगार है. यह न हो तो कैसे काम चले? सोचो, मेरे सारे पुरखे आज जिंदा होते तो क्या होता? मेरे बारे में भी जो लिखना पढ़ना है पहले ही लिख के मुझे पढ़ा दो. अपने मरने के बाद मैं कैसे पढ़ पाउंगा?' तो ऐसे थे 'बिज्जी' जो अपनी बातों की फुलवारी में हमेशा जिंदा रहेंगे.

मयंक शर्मा
मानव संसाधन विभाग,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

गेटिंग थिंग्स डन – फ्रांसिस लोबो

फ्रान्सिस लोबो लिखित पुस्तक "गेटिंग थिंग्स डन" का प्रकाशन ग्लोबल बिजनेस प्रेस द्वारा किया गया है. यह पुस्तक संस्था में कर्मचारी की उत्पादकता बढ़ाने में एक असाधारण मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है. एक प्रतिभावान कर्मचारी, जिसमें अपने कार्यों एवं अपने दायित्वों में शीर्ष पर बने रहने की क्षुधा है, के लिए यह गेम चेंजर का कार्य करती है, जो दैनिक आधार पर उसकी सोच और उसके कार्यों का प्रबंधन करने में सहायक सिद्ध होती है.

प्राक्कथन में अपने विचार "लक्ष्यों तक सभी बाधाओं और कठिनाइयों से निरंतर प्रयास, संसाधनों एवं अभ्यास, प्रयोग से सफलता अर्जित की जा सकती है;" से ही लेखक अपने स्पष्ट एवं सार-रूप कथन से पाठकों को बांध लेते हैं. लेखक द्वारा अपने विचारों को आकार देते हुए स्पष्ट किया गया है कि पुस्तक में ऐसे विचार, सिद्धान्त तथा तकनीकें दी गई हैं, जिनसे सफलता अर्जित करने में सहायता ली जा सकती है. सफलता प्राप्त करने के लिए कोई यूनीवर्सल फार्मूला नहीं है. प्रत्येक को अपने निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार खुद ही उन्हें अर्जित करना होता है. इस पुस्तक में दिए गए विचार तथा केस स्टडी पाठक के विचार एवं कार्य-योजना बनाने के लिए हैं, जिनसे पाठक अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं.

लेखक ने इसमें दैनिक कार्यों तथा दीर्घकालिक परियोजनाओं के उचित प्रबंधन के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जो यह अंतर्दृष्टि विकसित करने में सहायक होता है कि किस प्रकार व्यक्तिगत तथा पेशेवर जीवन का प्रबंधन किया जाए. यह पुस्तक जटिल अवधारणाओं को सरल तथा करने योग्य चरणों में विभक्त कर देने की लेखक की विशेषता के कारण पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है.

आप कर सकते हैं, सफलता के रास्ते की खोज, उच्चतम उत्पादकता, मानवीय क्षमताओं को जानना, टीम वर्क एवं सीखने की अवधारणा इन छः विषयों से जुड़े हुए विभिन्न अध्यायों में विकल्पों का चयन, योजना बनाना, लक्ष्य

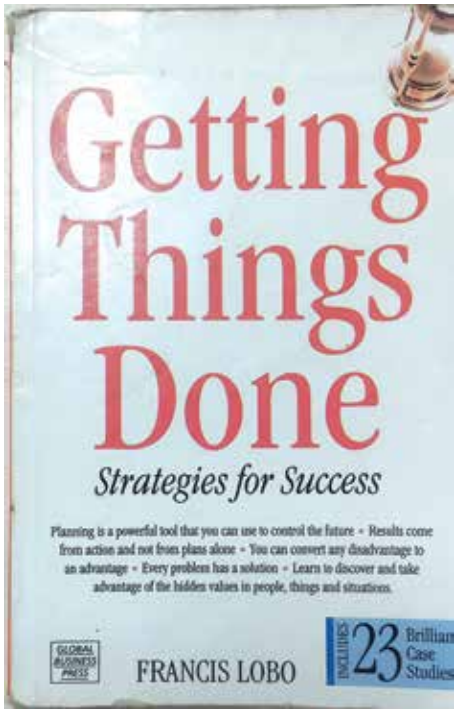

निर्धारण करना, वैज्ञानिक विश्लेषण करना, परिवर्तन प्रतिरोध अवधारणा को समझना, उद्देश्य को मिशन में बदलना, नेतृत्व की क्षमता विकसित करना, पेशेवर होना, समय प्रबंधन, निर्णय लेने की प्रक्रिया, रचनात्मकता, नवोन्मेषिता को बढ़ाना, सत्यनिष्ठा एवं नीति पालन करना, टीम वर्क, शक्तियों का प्रत्यायोजन, संवाद, स्नेह बढ़ाना जैसे विचारों पर केस स्टडी के साथ पाठक की समझ को विकसित करने से व्यक्तिगत विकास की पाठक की आकांक्षाओं का मार्ग प्रशस्त होता है.

"**आप कर सकते हैं**" इस अवधारणा में परिवर्तन के प्रति मानव व्यवहार को अच्छे से समझाते हुए व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने विचारों को विकसित करने की तकनीकों एवं अभ्यासों पर चर्चा की गई है. अपनी मेहनत एवं प्राप्त परिणाम के आकलन के साथ सफलता में अपनी विशेषताओं और कमियों को बताते हुए परिवर्तन के मार्ग में आने वाले प्रतिरोधों एवं उनसे उबरने पर प्राप्त होने वाली उपलब्धियों को सरलता से समझाया गया है.

"**सफलता के रास्ते की खोज**" की अवधारणा में नीतिगत निर्णयों, विश्वास, भय, विकल्प तथा अवसरों की उपलब्धता के बारे में विचार करते हुए सफलता की योजना एवं असफलता के कारणों के विश्लेषणात्मक कौशल पर व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है. कार्य-योजना के निर्माण के दौरान आदर्शवाद एवं व्यावहारिकता के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालते हुए अपने सामर्थ्य के आकलन, उपलब्ध संसाधनों, कमियों, अवसरों तथा खतरों के बीच सामंजस्य विकसित करने की संकल्पनाओं की विशद व्याख्या की गई है. लक्ष्य निर्धारण में कार्य-निष्पादन मानकों की स्थापना से दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाने और उनका मूल्यांकन करते हुए सुधार योग्य क्षेत्रों की पहचान कर उन पर काम करने के सिद्धान्तों को समझाया गया है, जिससे पाठक किए जाने वाले कार्य में लगने वाले समय का विश्लेषण कर अपने कार्य हेतु संसाधनों एवं योजनाओं को सफलता से मूर्त रूप देने के कौशल को निखार सकता है.

"**उच्चतम उत्पादकता**" की अवधारणा में उत्पादकता, तकनीक के स्तर, सहयोग, उपयोगिता के साथ केन्द्रित प्रयासों के महत्व, उनकी उपयोगिता पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए अन्तर्ज्ञान की भूमिका तथा अनिश्चितता जैसे विषयों को छुआ है. परिवर्तन तथा प्रतिरोध के सभी आयामों पर अंतर्दृष्टि देने से पाठक में परिवर्तन के विकासशील, प्राकृतिक तथा स्वस्थ होने की समझ विकसित होने से इसे सकारात्मक रूप से अपनाने में सफलता प्राप्त होती है. कार्य के उद्देश्य, निरन्तर बढ़ते योगदान से मिशन में ढलने में प्रबंधक के रूप में पाठक अपनी भूमिका इसके लाभों को भली प्रकार से समझता जाता है. ये सभी गुण पाठक में नेतृत्व क्षमता को विकसित करते चले जाते हैं. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में पाठक को अपनी भूमिका, अपना दृष्टिकोण, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किए जाने योग्य कार्यों की पहचान उसके लिए आवश्यक प्रेरणा, लक्ष्य के प्रति अपना ध्यान केंद्रित रखने तथा कठिनाइयों का सामना होने पर उसके समाधान खोजने के गुणों का स्वाभाविक विकास करती है.

"गेटिंग थिंग्स डन" की विशेषता यह है कि यह पाठक में 'इनबॉक्स' की अवधारणा को

विकसित करती है जो कि आने वाली सभी सूचनाओं के लिए एक केन्द्र का कार्य करता है, जिससे पाठक का दिमाग विविध विचारों में बिना उलझे निरंतर कार्य करता है. इससे पाठक अपने निर्धारित सभी प्रकार के कार्यों एवं लक्ष्यों को अर्जित करता चला जाता है. यह संकल्पना विविध विचारों के झंझावात में उलझने के स्थान पर एक समय में एक कार्य को पूर्णता के साथ करने की क्षमता को पाठक में विकसित करती है.

मानवीय क्षमताओं को जानने की अवधारणा में पाठक में उपस्थित सभी मानवीय गुणों, अवगुणों, उनके अंतर्सम्बन्ध, अंतर्विरोध पर प्रकाश डाला गया है. पेशेवर विशेषज्ञता के विकास में संस्था की संरचना, नीति, संसाधन, अर्जित अनुभव से सफलता प्राप्त करने के विचारों पर विस्तार से बताया गया है. लक्ष्य अर्जन हेतु आवश्यक प्रेरणा, समय प्रबन्धन, अवरोधों से उबरने के लिए भूत, वर्तमान तथा भविष्य पर विचार के साथ समस्या का निराकरण करने के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए टकराव, अस्पष्टता, अनिश्चितता, खराब निर्णयों से मिलने वाली नसीहतों को काम में लेकर प्राप्त सूचना का संधारण करते हुए कार्यान्वयन के विविध प्रकारों को अपनाने के बारे में बताया है. इससे पाठक के कार्य करने की रचनात्मकता, नवोन्मेषिता बढ़ती है.

"एक व्यक्ति संपूर्ण टीम से बेहतर कार्य नहीं कर पाएगा." इस वाक्य से टीम वर्क के महत्व को उजागर करते हुए लेखक ने संस्थागत हित में व्यक्तिगत एवं टीम के लक्ष्यों एवं दीर्घकालिक सोच को अपनाते हुए सभी सदस्यों में शक्तियों के प्रत्यायोजन से सभी को शामिल करने की अवधारणा को आत्मसात करने पर ध्यान दिया है. एक सफल टीम उचित संवाद एवं नियमित निरीक्षण से किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति कर सकती है. यह भावना टीम के सभी सदस्यों के बीच आपसी सम्मान, स्नेह की भावना का विकास करती है. पाठक को यह साफ होता जाता है कि यदि वह एकजुट होकर लक्ष्य की ओर केंद्रित टीम के निर्माण में सफल रहता है तो वह न केवल स्वंय के लिए अपितु संस्था के लिए ऐसे कार्मिकों का कार्य-बल तैयार कर देता है जो न केवल संस्था बल्कि समाज के लिए भी हितकारी होते हैं.

लेखक की अनुशंसाओं का अनुवर्तन कर पाठक अपनी सोच में स्पष्टता, अपने लक्ष्यों के साथ अपनी उत्पादकता में अतुलनीय वृद्धि कर सकते हैं. संस्थागत कौशल एवं अपनी उत्पादकता बढ़ाने पर विचार कर रहे किसी भी पाठक के लिए फ्रान्सिस लोबो की पुस्तक "गेटिंग थिंग्स डन" अपरिहार्य है. लेखक का व्यावहारिक दृष्टिकोण, अंतर्दृष्टिपूर्ण सलाह तथा बांधे रखने की लेखन शैली इसके पाठकों को वे सभी संसाधन उपलब्ध कराती है, जिनसे उनकी दक्षता एवं स्वास्थ्य पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे अपने जीवन पर नियंत्रण पाते हुए अपने लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं.

विकास तिवाड़ी
क्षे. का., जोधपुर

राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 18.10.2023 को श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (क्षे. का. का.) भारत सरकार ने क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया.

दिनांक 28.11.2023 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक, क्षे. का. का. (दक्षिण), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया.

दिनांक 20.10.2023 को श्री रामजीत सिंह, सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा), केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया.

दिनांक 07.12.2023 को सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री रामजीत सिंह, केंद्रीय कार्यालय, द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया.

सच्चा सौदा

लखनऊ में उत्तराखंड महोत्सव अपने चरम पर था, प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु के प्रारंभ में गोमती नदी के किनारे लगने वाला यह मेला उत्तराखंड के कुमाऊँ और गढ़वाल मंडल की एक सुनहरी छवि प्रस्तुत करता है. महोत्सव के दौरान प्रत्येक संध्या को आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुत होने वाले लोक नाट्य, नृत्य एवं पहाड़ी गीत, देखने वालों को उत्तराखंड की वादियों में खींच ले जाते हैं. मेले में लगने वाले पहाड़ी परिधानों की दुकानें, विशेषकर ऊनी वस्त्र जैसे कोट, उत्तराखंडी सदरियाँ, टोपियाँ, साड़ियाँ एवं बच्चों के परिधान ग्राहकों को अनायास ही मोह कर अपनी ओर खींच लेते हैं.

हमारे कार्यालय के विभागाध्यक्ष पंत जी, जो उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र, हल्द्वानी के ही रहने वाले हैं, जो दो ही दिन पहले सपरिवार उत्तराखंड महोत्सव घूम कर आए थे और तभी से कार्यालय में कई बार उस महोत्सव की भूरि-भूरि प्रशंसा कर चुके थे. पंत जी महोत्सव से दो कोट भी लेकर आए थे जो सचमुच बहुत सुंदर थे. कई बार उनके मुख से उस महोत्सव का वृत्तान्त सुनकर अब मेरी एवं कार्यालय के अन्य साथियों की भी महोत्सव घूमने की अभिलाषा बलवती हो चुकी थी. हम लोगों ने अपने विभागाध्यक्ष पंत जी की अगुवाई में, अन्य साथी माहेश्वरी जी, हमारे सबसे वरिष्ठ साथी प्रसाद जी के साथ शाम को महोत्सव जाने की योजना बनाई.

शाम को हम अपना काम समाप्त करके एक साथ महोत्सव के लिए निकल गए. महोत्सव की चहल पहल काफी दूर से ही दिखाई दे रही थी.

लोगों का मुख्य आकर्षण मेले मे सजी हुई दुकानों की तरफ दिखाई दे रहा था. पहाड़ी अनाजों, पहाड़ी अचार, कलाकृतियाँ, बर्तन, मेवे, बच्चों के खिलौने एवं विभिन्न प्रकार के परिधान सभी प्रकार की दुकानों में लोग अपनी रुचियों के अनुसार भीड़ लगाए हुए थे. हम लोगों की निगाह कोट वाले की दुकान को खोज रही थी, पंत जी के कोट देखकर हमारा मन जो ललचा उठा था. अंततः हमनें कोट वाले की दुकान खोज निकाली और कोट तथा सदरियों पर अपनी निगाहें दौड़ाने लगे. हम लोग अपनी पसंद के कोट पहन - पहन कर देख रहे थे तथा उनकी नाप, मूल्य एवं सुंदरता का आकलन कर रहे थे. अंततः मैंने, पंत जी ने और माहेश्वरी जी ने एक - एक कोट पसंद किया और मोल भाव करके उनका दाम चुका दिया. इस बीच हमारे प्रसाद जी, जिनको कोट देखने या खरीदने में विशेष रुचि नहीं थी, दिखाई नहीं दे रहे थे. हम लोगों ने कोट खरीदने के बाद प्रसाद जी को ढूँढ़ना आरंभ किया, थोड़ी ही दूर पर प्रसाद जी एक मेवे की दुकान पर दिख गए जो बड़ी ही तल्लीनता के साथ मेवे के विक्रेता से मोल भाव कर रहे थे. हम सब भी वहाँ पहुंच गए और प्रसाद जी से चुटकी लेते हुए पूछा कि आपने कोट क्यों नहीं लिया, तो उन्होंने अपनी हाजिर जवाबी दिखाते एवं मुस्कराते हुए कहा कि "बादाम खाने वालों को कोट पहनने की आवश्यकता नहीं पड़ती". हम लोगों ने भी थोड़ी बहुत मात्रा में काजू, बादाम किशमिश इत्यादि खरीदे. हमारे प्रसाद जी ने काफी अधिक मात्रा में मेवे खरीदे. प्रसाद जी के घर में अधिक लोग नहीं थे. अतः हम सब सोच रहे थे कि वे इतने मेवे का क्या करेंगे और बीच बीच में उनसे चुटकी भी ले रहे थे. प्रसाद जी केवल मुस्कुरा रहे थे लेकिन कोई जवाब नहीं दे रहे थे. ऐसे ही हंसी ठिठोली करते और मेले में ही कुछ खा पी कर हम महोत्सव से वापस आ गए, लेकिन प्रसाद जी के मेवे का मुद्दा अभी तक जीवित था.

अगले दिन हम अपने कार्यालय में अपने-अपने नए कोट पहन कर आए और सबसे उनकी प्रशंसा सुन कर फूले नहीं समा रहे थे. प्रसाद जी अपने कक्ष में इन सब चर्चाओं से परे शांत बैठे थे. वे अपना मेवे का झोला भी साथ लाए थे, जो उनकी मेज के नीचे रखा हुआ था. हम लोगों ने पूछा "प्रसाद जी क्या हम सबको भी खिलाएँगे" वे मुस्कुराते हुए बोले "हाँ हाँ क्यों नहीं" और अपने झोले में से चार-चार बादाम निकाल कर हमारे हाथों में रख दिए. इसके बाद हम सब अपना-अपना काम निपटाने लगे. दोपहर को भोजनवकाश के बाद अक्सर हम सभी लोग थोड़ा टहल लेना पसंद करते हैं, लेकिन आज प्रसाद जी कुछ जल्दी दिखा रहे थे. प्रसाद जी हमें बाहर ही छोड़ कर अपने कक्ष की ओर चले गए और बाकी लोग टहलने में मग्न हो गए. कुछ देर के बाद प्रसाद जी अपने मेवे वाले झोले के साथ इधर-उधर देखते हुए बड़ी ही शांति से पुनः बाहर निकलते हुए दिखाई दिए. उनको ऐसे चुपचाप निकलते हुए देख मेरे मन की शंकाएं और कौतुहल अंगड़ाइयाँ लेने लगीं. मैं भी चुपचाप दबे पाँव उनके पीछे चल दिया, प्रसाद जी अप्रत्याशित रूप से काफी तेज चल रहे थे और कुछ दूर जा कर पुलिस कॉलोनी की तरफ मुड़ गए, जहाँ कुछ ही दूरी पर झुग्गियां बनी हुईं थीं और अक्सर वहाँ कुछ बच्चे ठंड की दोपहर अथवा शाम को दिये की रोशनी में पढ़ते हुए दिख जाते थे. प्रसाद जी ने ठीक वहीं पर पहुंच कर उन बच्चों को आवाज दी और पूरा झोला उनकी ओर बढ़ा दिया. फिर स्नेह से उनके सिर पर अपना हाथ फेरते और अपना आशीष देते हुए वापस लौट पड़े. मैं पीछे हट कर एक पान की दुकान की ओट में आ गया ताकि वे मुझे न देख सकें क्योंकि मैं उनके आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था. अब मेरा कौतुहल शर्मिंदगी में रूपांतरित हो गया था. उनके प्रति हमारी परिहास ही भावना गहरे सम्मान में बदल चुकी थी, आज प्रसाद जी का यह रूप देख कर हमें स्वयं को दर्पण से मुंह चुराने की इच्छा हो रही थी. उस महोत्सव में हम सब ने कुछ न कुछ सौदा लिया था, किन्तु जो सौदा प्रसाद जी ने किया था असल में वही सच्चा सौदा था.

मोहित मिश्रा
यू.एल.ए., लखनऊ

जगन्नाथ मंदिर

जगन्नाथ मंदिर ओडिशा राज्य के पुरी में स्थित है. भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी की छोर पर बसी पवित्र नगरी पुरी उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग 65 कि.मी. की दूरी पर है. आज का ओडिशा प्राचीनकाल में उत्कल प्रदेश के नाम से जाना जाता था. इस मंदिर को हिंदुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है. द्वापर के बाद भगवान कृष्ण पुरी में निवास करने लगे. यह धाम वैष्णव संप्रदाय का मंदिर है जो भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण को समर्पित होने के कारण इस क्षेत्र को जगन्नाथ पुरी कहा जाता है. पुराणों में इसे धरती का वैकुंठ कहा गया है.

मंदिर का वृहत क्षेत्र 4,00,000 वर्ग फुट में फैला हुआ है और चहारदीवारी से घिरा हुआ है. कलिंग शैली के मंदिर स्थापत्यकला और शिल्प के आश्चर्यजनक प्रयोग से परिपूर्ण, यह मंदिर, भारत के भव्यतम स्मारकों में से एक है. मुख्य मंदिर वक्ररेखीय आकार का है, जिसके शिखर पर श्री सुदर्शन चक्र (आठ आरों का चक्र) मंडित है. इसे नीलचक्र भी कहते हैं. यह अष्टधातु से निर्मित है और अति पावन और पवित्र माना जाता है. मंदिर का मुख्य ढांचा एक 214 फीट ऊंचे पाषाण चबूतरे पर बना है. इसके भीतर आंतरिक गर्भगृह में मुख्य देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं. इस मंदिर में प्रविष्टि प्रतिबंधित है. इसमें गैर-हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है. पर्यटकों की प्रविष्टि भी वर्जित है.

इस मंदिर से जुड़ी परंपरागत कथा के अनुसार, भगवान जगन्नाथ जी की इंद्रनील या नीलमणि से निर्मित मूल मूर्ति, एक अगरू वृक्ष के नीचे मिली थी. यह इतनी चकाचोंध करने वाली थी कि धर्म ने इसे पृथ्वी के नीचे छुपाना चाहा. मालवा नरेश इंद्रद्युम्न को स्वप्न में यही मूर्ति दिखाई दी थी. कई ग्रंथों में राजा इंद्रद्युम्न और उनके यज्ञ के बारे में विस्तार से लिखा है. एक रात भगवान विष्णु ने उनको सपने में दर्शन दिए और कहा कि निलांचल पर्वत की एक गुफा में मेरी एक मूर्ति है उसे

नीलमाधव कहते हैं एक मंदिर बनवाकर उसमें यह मूर्ति स्थापित करें. मान्यता है कि आज भी जगन्नाथ जी की मूर्ति में श्रीकृष्ण का हृदय सुरक्षित है. भगवान के इस हृदय अंश को ब्रह्म पदार्थ कहा जाता है. मंदिर की परंपरा के अनुसार जब हर 12 साल में मंदिर की मूर्ति बदली जाती है तो ऐसे में इस ब्रह्म पदार्थ को पुरानी मूर्ति से निकालकर नई मूर्ति में स्थापित कर दिया जाता है. उस समय पूरे शहर की बिजली बंद कर दी जाती है और मंदिर के आस पास अंधेरा कर दिया जाता है.

इस मंदिर की वार्षिक रथ यात्रा प्रसिद्ध उत्सव है. इसमें मंदिर के तीनों मुख्य देवता, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र और भगिनी सुभद्रा, तीन अलग-अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं.

आधुनिक काल में यह मंदिर सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों और प्रकार्यों में व्यस्त है. जगन्नाथ मंदिर का एक बड़ा आकर्षण यहां की 1100 साल पुरानी रसोई है. यह रसोई भारत की सबसे बड़ी और विख्यात रसोई के रूप में जानी जाती है. इस विशाल रसोई में भगवान को चढ़ाने वाले महाप्रसाद को तैयार करने के लिए 500 रसोईयां तथा उनके 300 सहयोगी काम करते हैं. मंदिर की रसोई दक्षिण-पूर्व दिशा में है, जिसमें 24 चूल्हे हैं. इसके अलावा रसोई में गंगा-यमुना नाम के दो कुएं हैं जिसका पानी भोग बनाने में इस्तेमाल होता है. यहां नियमित रूप से 1 लाख लोगों के लिए खाना बनाया जाता है और दिन में 06 बार भगवान जगन्नाथ जी को भोग लगाया जाता है. इस दौरान जगन्नाथ जी के समक्ष कुल 56 तरह के पकवान सजाए जाते हैं.

जगन्नाथ मंदिर के कुछ रहस्यों का जवाब विज्ञान के पास भी नहीं है. आमतौर पर दिन के समय हवा समुद्र से धरती की तरफ चलती है और शाम को धरती से समुद्र की तरफ, लेकिन हैरानी वाली बात यह है कि यहां यह प्रक्रिया उल्टी है. मंदिर का झण्डा हमेशा हवा की दिशा के विपरीत दिशा में लहराता है. ऐसे ही कई अनोखी बातों का क्षेत्र जगन्नाथ पुरी अवश्य ही एक महत्वपूर्ण धार्मिक और पर्यटन स्थल है.

सुनील अगरवाल
क्षे.का., गुवाहाटी

दिनांक 28.11.2023 को नराकास, मंगलूरु द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु अंचल कार्यालय, मंगलूरु को 'विशेष' पुरस्कार से सम्मानित किया गया. श्री अनिर्बान कुमार विश्वास - उप निदेशक, क्षे. का. का., (दक्षिण), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जॉन अब्राहम, व. प्र. (रा.भा.).

दिनांक 21.11.2023 को नराकास, हल्द्वानी की छमाही समीक्षा बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, हल्द्वानी को वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री गृज नन्दन प्रसाद गुप्ता, उप क्षेत्र प्रमुख के साथ नरेन्द्र कुमार, सहा. प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 18.12.2023 को नराकास, गाजीपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, गाजीपुर को 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया गया. नराकास अध्यक्ष श्री के.डी. गुप्ता से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अनुराग कुमार सिंह, प्रबंधक (रा.भा.)

दिनांक 13.12.2023 को नराकास, राजनांदगाँव द्वारा राजनांदगाँव शाखा को वर्ष 2023 हेतु 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया. राजभाषा शील्ड के साथ शाखा प्रमुख श्री मोहनीश कुमार ठाकुर एवं टीम.

दिनांक 14.12.2023 को नराकास, बलोद द्वारा बलोद शाखा को वर्ष 2023 हेतु 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया. राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए शाखा प्रबन्धक श्री सरोज टोप्पो.

दिनांक 28.11.2023 को नराकास, आणंद की छमाही बैठक में वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद को 'प्रथम' पुरस्कार प्रदान किया गया. नराकास अध्यक्ष श्री राजकुमार महावर, से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्रीमती ऋचा जाजोरिया तथा श्री राजेश जोशी, प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 24.11.2023 को नराकास, संबलपुर की छमाही बैठक में 2022-23 वर्ष हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर को 'द्वितीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. अध्यक्ष, नराकास श्री जुगल कुमार बोरा से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री गोपाल चरण सेठ, उप क्षेत्र प्रमुख एवं श्री रोहित साव, स.प्र.(रा.भा.).

दिनांक 20.12.2023 को नराकास, वडोदरा द्वारा वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा को वर्ष 2022-23 हेतु राजभाषा शील्ड के अंतर्गत 'द्वितीय' पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सत्येंद्र, व.प्र. (रा.भा.).

दिनांक 12.12.2023 को आयोजित नराकास, हुब्बल्ली की अर्ध वार्षिक बैठक में वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली को 'द्वितीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. श्री संजीव किशोर, अध्यक्ष, नराकास के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री हरि राम एस वी एस, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री प्रशांत एन कित्तली, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 26.12.2023 को नराकास, दुर्गापुर द्वारा वर्ष 2023 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर को 'द्वितीय' पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख श्री भवेश प्रकाश.

दिनांक 18.12.2023 को नराकास, वाराणसी की बैठक के दौरान अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी की संयुक्त गृह पत्रिका 'यूनियन काशी प्रवाह' को सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए उप अंचल प्रमुख श्री सत्येंद्र कुमार सिंह एवं उप क्षेत्र प्रमुख श्री प्रेमनाथ रॉय.

दिनांक 17.10.2023 को नराकास, नागपुर द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर को 'तृतीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. डॉ सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक क्षे. का. का. से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री एम वी एन रवि शंकर, एवं सुश्री कुमुद ढाकने, प्रबंधक (रा.भा.).

वर्ष 2022-23 हेतु नराकास, दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली को 'प्रोत्साहन' पुरस्कार और क्षेत्रीय कार्यालय, की गृह पत्रिका 'यूनियन महक' को 'तृतीय' पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 22.12.2023 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में पुरस्कार प्राप्त करते हुए उप क्षेत्र प्रमुख, श्री शशि कान्त प्रसाद.

दिनांक 24.11.2023 को आयोजित नराकास, धनबाद की छमाही बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, धनबाद को वर्ष 2022-23 हेतु 'प्रोत्साहन' पुरस्कार प्रदान किया गया. निदेशक (कार्मिक), भारत कोकिंग कोल लिमिटेड और निदेशक आई.आई.टी, आई.एस.एम-धनबाद से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री विक्रांत कुमार, प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 23.11.2023 को नराकास, बर्नपुर आसनसोल द्वारा राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर के क्षेत्राधीन आसनसोल एलआईसी बिल्डिंग शाखा को 'राजभाषा उन्नायक' पुरस्कार प्रदान किया गया.

दिनांक 15.12.2023 को नराकास, बेंगलूरु की छमाही बैठक में केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक व सीईओ, श्री के. सत्यनारायण राजू से राजभाषा कार्यान्वयन में विशिष्ट योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री सुनील कुमार गौड़, वरिष्ठ प्रबंधक (संकाय).

दिनांक 15.12.2023 को नराकास, बेंगलूरु की छमाही बैठक में केनरा बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री अशोक चंद्रा से राजभाषा कार्यान्वयन में विशिष्ट योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री नितिन डी. गोसावी, मुख्य प्रबंधक (संकाय).

दिनांक 15.12.2023 को नराकास, बेंगलूरु की छमाही बैठक में केनरा बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री अशोक चंद्रा से राजभाषा कार्यान्वयन में विशिष्ट योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री कृष्ण कुमार यादव, मुख्य प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 15.12.2023 को आयोजित नराकास बेंगलूरु की अर्धवार्षिक बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण) की हिंदी पत्रिका 'यूनियन कावेरी' को श्रेष्ठ पत्रिका की श्रेणी में 'प्रथम' पुरस्कार प्राप्त हुआ. सुश्री सोनाली सेन गुप्ता, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक से श्री गुरूप्रसाद, उप क्षेत्र प्रमुख ने शील्ड प्राप्त की.

दिनांक 15.12.2023 को आयोजित नराकास बेंगलूरु की अर्धवार्षिक बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर) की गृह पत्रिका 'यूनियन गंगाकावेरी' को श्रेष्ठ पत्रिका की श्रेणी में 'द्वितीय' पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक, क्षे. का. का., (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री राजेंद्र कुमार.

पत्रिका विमोचन

दिनांक 15.12.2023 को यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र की पत्रिका 'यूनियन ज्ञान दीपिका' के सितंबर, 2023 अंक का विमोचन करते हुए नराकास के अध्यक्ष एवं केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक व सीईओ श्री के. सत्यनारायण राजू.

दिनांक 19.12.2023 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद एवं क्षेत्रीय कार्यालय, सिकंदराबाद की संयुक्त पत्रिका 'यूनियन कोहिनूर' का विमोचन करते हुए श्री कारे भास्कर राव, अंचल प्रमुख.

दिनांक 29.11.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर की गृह पत्रिका 'यूनियन प्रवाह' का विमोचन पुणे अंचल प्रमुख श्री नवीन कुमार जैन द्वारा किया गया.

दिनांक 27.10.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर में क्षेत्र प्रमुख श्री अमित कुमार सिन्हा द्वारा क्षेत्रीय गृह पत्रिका 'यूनियन प्रगति' के सितंबर 2023 अंक का विमोचन किया गया.

दिनांक 20.12.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद कोटी की गृह पत्रिका 'यूनियन राजभाषा सरिता' के सितंबर 2023 अंक का विमोचन क्षेत्र प्रमुख श्री कल्याण वर्मा द्वारा किया गया.

दिनांक 24.11.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में क्षेत्र की गृह पत्रिका 'यूनियन आरोही' सितंबर 2023 अंक का विमोचन क्षेत्र प्रमुख श्री अनुज कुमार सिंह द्वारा दिया गया.

दिनांक 06.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री टी शिवदास, मुख्य प्रबंधक (परिचालन) द्वारा किया गया.

दिनांक 18.11.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन उप क्षेत्र प्रमुख श्री एन सनल कुमार द्वारा किया गया.

दिनांक 28.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन क्षेत्र प्रमुख, श्री एम वेंकट तिलक की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 16.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा में क्षेत्र प्रमुख श्री प्रशांत एम देसाई एवं उप क्षेत्र प्रमुख श्री भोला नाथ झा ने एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया.

दिनांक 16.12.2023 को दिल्ली अंचल के क्षेत्रीय कार्यालयों की संयुक्त एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 16.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, मऊ में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र प्रमुख श्री मिथिलेश कुमार द्वारा किया गया.

दिनांक 16.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 11.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, खम्मम द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 28.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उदघाटन श्री धर्मेंद्र राजोरिया, क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर एवं श्री हरेन्द्र कुमार जेना, उप क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर ने किया.

दिनांक 08.12.2023 को आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के अवसर पर प्रतिभागियों के साथ श्री खालिद इकबाल, उप क्षेत्र प्रमुख, पटना श्री ऋषभ कुमार, मुख्य प्रबंधक (परिचालन) तथा डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, प्रबंधक (रा.भा.).

दिनांक 26.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, चंदौली द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन में किया गया.

दिनांक 07.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण) में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र प्रमुख श्री असीम कुमार पाल द्वारा किया गया.

दिनांक 13.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर) द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ क्षेत्र प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार.

दिनांक 07.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, गाजीपुर द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 20.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन उप क्षेत्र प्रमुख श्री शशांक कुमार द्वारा किया गया.

दिनांक 28.11.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई.

आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' अप्रैल-जून, 2023 का अंक प्राप्त हुआ. मनोहर प्राकृतिक छटा के अपीच्य आवरण से सुशोभित तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का यह अंक दृष्टार्थ, अभिरम्य तथा अभिव्यंजक सामग्रियों के साथ पाठकों की अभिरुचि अनुरूप उन्हें समाकर्षित कर रही हैं.

मन को स्पर्श करती काव्यधाराएं, संपादकीय, चौपाल, आत्मसंतुष्टि, योग: एक वृहद जीवन शैली, अश्वथामा की अमर मणि, अंतिम स्मृति जैसे स्तम्भ सुष्ठु और सराहनीय हैं. समकालीन हिन्दी कविता के संवेदनशील नागर रघुवीर सहाय तथा बाल साहित्यकार पवन कुमार वर्मा के साक्षात्कार के माध्यम से परिचय पत्रिका की साहित्यिक अभिख्या में संवर्धन का कार्य कर रही है. ग्राहक सेवा एवं अनुवाद, अर्थव्यवस्था में बैंकों का योगदान, भारतीय बैंकिंग: अतीत वर्तमान एवं भविष्य, ओटीएस वसूली का महत्वपूर्ण उपाय, ई-रूपी, साइबर सुरक्षा जोखिम प्रबंधन जैसे वैविध्यपूर्ण विषयों पर सुधि स्टाफ सदस्यों के अवेक्षित आलेख पठनीय है.

यह ध्यातव्य है कि हिंदी में प्रचलित पूर्ण विराम (।) देवनागरी लिपि की पहचान है. इसके स्थान पर पूर्ण विराम (.) का प्रयोग हिन्दी के स्वकीय श्रृंगार को क्षत करता है. पूर्ण विराम (।) का प्रयोग हिन्दी प्रेमियों को विमोहित करेगा.

इस अंक हेतु 'यूनियन सृजन' की सम्पूर्ण टीम अपनी सुरुचिपूर्ण कल्पनाशीलता, साहित्यिक अभिरुचि और संभावनाशील संपादनकला शुभेच्छा के पात्र हैं. आगामी अंक हेतु शुभकामनाएं.

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी
मुख्य प्रबन्धक, राजभाषा विभाग
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

आपकी ई-पत्रिका 'यूनियन सृजन' अप्रैल-जून, 2023 अंक प्राप्त हुई, जिसके लिए सादर धन्यवाद। पत्रिका का कवर पृष्ठ काफी आकर्षक है. रचनाओं में बैंकिंग, वित्तीय, आयुर्वेद, योग, सूचना प्रौद्योगिकी आदि का अच्छा मिश्रण है. यह रचनाकारों की उत्कृष्टता को दर्शाता है भारतीय बैंकिंग-अतीत, वर्तमान और भविष्य, ई-रूपी, साइबर सुरक्षा, योग आदि जैसे बहुआयामी लेखों ने महत्वपूर्ण जानकारियाँ देकर प्रकाशन को सार्थकता प्रदान की है.

आखिर के कुछ पृष्ठों में मुद्रित तस्वीरों, फोटो आदि ने पत्रिका को स्वत: आकर्षण से परिपूर्ण किया है. पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादकों एवं प्रकाशकों को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के प्रकाशनों की सफलता हेतु शुभकामनाएं.

गौरव पाण्डेय
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राष्ट्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,
चेरूतुरूति, तृश्शूर (नराकस तृश्शूर सदस्य)

भाषा-विशेषांक पर आधारित 'यूनियन सृजन' सितंबर 2023 अंक प्राप्त हुआ. सर्वप्रथम, इस अत्यंत बेहतरीन पत्रिका के प्रकाशन पर आपको अशेष बधाइयाँ. पहली नज़र में ही कलेवर ने मन मोह लिया, जो मयूर पंख के रूप में भारत की भाषायी विविधता के साथ ही सांस्कृतिक विविधताओं की भी याद दिलाता है.

पत्रिका में समाहित भाषा पर आधारित विभिन्न आलेख अत्यंत ही ज्ञानवर्द्धक एवं दिलचस्प हैं, जिन्हें पढ़कर जहां एक तरफ हिंदी भाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ मिलती हैं, वहीं दूसरी तरफ,उनका प्रारूप सूचनात्मक होने के बावजूद भाषा शैली की सहजता एवं भाषा की सरलता उसे कहीं भी बोझिल नहीं बनने देता.

'बैंकिंग शब्दावली', 'भारतीय भाषाई ई-टूल्स' एवं 'प्रौद्योगिकी और हिंदी' आदि आलेख सूचना से लबालब भरे एवं आज के भाषायी विकल्पों से भरे समाज के लिए अत्यंत ही प्रासंगिक बन पड़े हैं. साथ ही, कविताओं एवं चित्रों ने पत्रिका के सर्वांग कलेवर में चार-चाँद लगा दिया है.

अंत में, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि प्रबंध निदेशक एवं सीईओ मैडम का संदेश पत्रिका को तथा उसके ध्यातव्य को एक पूर्णता प्रदान करता है.

अत: इस खूबसूरत अंक के लिए आपको एक बार पुन: बधाई.

अजय कुमार तिवारी
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)
भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, हैदराबाद

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' सितंबर 2023 अंक का हमने अवलोकन किया. 'यूनियन सृजन', एक शानदार पत्रिका है इसकी विषयवस्तु बैंकिंग के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली जानकारी प्रदान कर रही है. पत्रिका की विषयवस्तु एवं प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रभावशाली है. बैंकिंग से संबंधित जानकारियों के साथ-साथ राजभाषा, नवीनतम सुझावों, तकनीकी अद्यतनों और वित्तीय समाचारों को भी साझा किया गया है. यह पत्रिका बैंकिंग के क्षेत्र में अद्यतन रहने में मदद करती है और विभिन्न बैंकिंग समस्याओं का समाधान प्रदान करती है. इसके अलावा, इसमें बैंक कर्मियों और उनके लिए उपयुक्त उपकरणों के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई है.

पत्रिका की सफलता की हम कामना करते है.

हार्दिक शुभकामनों सहित.

भक्ति सरकार
वरिष्ठ प्रबंधक- राजभाषा
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद

'यूनियन सृजन' का सितंबर 2023 अंक पढ़कर मुझे प्रसन्नता के साथ आश्चर्य भी हुआ. पत्रिका में इतने उत्कृष्ट आलेख संगृहीत हैं जो कल्पनातीत है. संपादन की जितनी भी सराहना की जाए कम है. पत्रिका हिंदी भाषा के प्रति यूनियन बैंक की प्रतिबद्धता को प्रमाणित करती है. 'यूनियन सृजन' का यह अंक अत्यंत सुंदर, सारगर्भित एवं जानकारी परक तथ्यों के विविध आयामों का एक सृजनात्मक गुलदस्ता है जो पठनीय होने के साथ-साथ संग्रहणीय भी है.

ज्ञानचंद मर्मज्ञ,
प्रसिद्ध हिंदी कवि, बेंगलूरु

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर का निरीक्षण - 05.10.2023

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के संयोजक डॉ. मनोज राजोरिया के कर कमलों से सफल निरीक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.). साथ हैं श्री विपिन कुमार शुक्ला, अंचल प्रमुख, जयपुर, श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, जयपुर, श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री रामजीत सिंह, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), श्री कमल कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.) अं. का. जयपुर, श्री संजय कुमार राय, उप सचिव, वित्त मंत्रालय तथा श्रीमती सोनिया चौधरी, प्रबंधक (रा.भा.), क्षे. का. जयपुर.

संसदीय समिति के माननीय सदस्यों के कर-कमलों से क्षे.का., जयपुर द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य 'बैंक द्वारा संचालित जनसुरक्षा योजनाएं' का विमोचन किया गया.

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

रवींद्र सिंह
अंचल कार्यालय, जयपुर